यादव जीवन

(प्रथम-द्वितीय भाग)

—पं० सुन्दरलाल सगर (यादव)

समालोचनार्थ

सेवा में

श्री सम्पादक जी

'अर्जुन'

दो प्रति

आभारी

"यादव-जीवन"

स्वत्वाधिकार हमारा पैत्रिक धन है।

श्रीमान् पण्डित सुन्दरलाल सगर (यादव)

लेखक——'यादव जीवन'

आगरा

ओ३म्

* यादव जीवन *

(प्रथम-द्वितीय भाग)

लेखक

पं० सुन्दरलाल सगर

संस्थापक

श्री जाटव महासभा व जाटव प्रचारक महामण्डल

(आगरा)

हम कौन थे क्या होगये, अब तो तुम्हें कुछ ध्यान हो।
बहु-काल बीता सुप्त रहते भूलो न यदु-सन्तान हो॥

प्रकाशक

श्री जाटव महासभा (आगरा)

संवत् १९८६ वि० सन १९२९ ई०

विजयदशमी

द्वितीय संस्करण १०००

दोनों भागों का मूल्य ।)

"यादव-जीवन"

स्वत्वाधिकार हमारा पैत्रिक धन है।

श्रीमान् पण्डित सुन्दरलाल सगर (यादव)

लेखक—'यादव जीवन'

आगरा

ओ३म्

* यादव जीवन *

(प्रथम-द्वितीय भाग)

लेखक

पं० सुन्दरलाल सगर

संस्थापक

श्री जाटव महासभा व जाटव प्रचारक महामण्डल
(आगरा)

हम कौन थे क्या होगये, अब तो तुम्हें कुछ ध्यान हो।
बहु-काल बीता गुप्त रहते भूलो न यदु-सन्तान हो॥

प्रकाशक

श्री जाटव महासभा (आगरा)

संवत् १९८६ वि० सन् १९२९ ई०
विजयदशमी

द्वितीय संस्करण १०००

दोनों भागों का मूल्य ॥)

प्रकाशक—
श्री जाटव महासभा
आगरा

मुद्रक—
रत्नाश्रम फ़ाइन् आर्टस् प्रिंटिङ्ग वर्कस्
आगरा

विषय-सूची

प्रथम भाग

द्वतीय भाग

संख्या	विषय	पृष्ठ

———

धन्यवाद

जादव प्रचारक महा मण्डल द्वारा प्रकाशित (यादव जीवन) प्रथम संस्करण पाठकों के लिये कितना उपादेय सिद्ध हुआ है, यह इसी से जान पड़ता है, कि आज इसका तृतीय परिवर्द्धित एवं संशोधित चित्रमय संस्करण आपके करारविन्द में है और हमें यह विश्वास है कि इस बार इसे इतने आकर्षक और सुन्दर रूप में प्रकाशित देख कर पाठकों को हर्ष होगा।

यह बात सर्वांश में सत्य है, कि यादव-जनता में अभी सन्तोषप्रद साहित्यिक रुचि उत्पन्न नहीं हुई है और इस कारण सुगमता से किसी भी ग्रन्थ का यादव जनता द्वारा सम्मानित होना अति कठिन है। लेकिन हर्ष का स्थल है कि यह बात यादव जीवन के विषय में नहीं है। यादव जनता ने जिस प्रेम, सम्मान, उत्साह से उसे अपनाया है, वह वास्तव में सराहनीय है।

"यादव जीवन" के प्रकाशन में आर्थिक-सहायता देकर जिन सज्जनों ने अपनी उदारता और प्रेम का परिचय दिया है, उनको हम धन्यवाद देते हैं। उन सज्जनों के नाम निम्नोल्लिखित हैं :—

श्री मांगीलालजी ओवरसियर, श्री खचेरारामजी, श्री ओंकार जी श्री धन्नारामजी, श्री प्रसादीलाल जी, श्री डाक्टर सीताराम रामचन्द्रजी, श्री तलफीरामजी, श्री पं० छेदीलालजी

करिडक, श्री पं० वंशीधर जी, श्री बा० रामप्रसाद जी मंत्री जाटव महासभा, श्री पंडित पूर्णचन्द्र जी केन, श्री बा० लक्षमनसिंह न्यू दहली, श्री बा० जीवन रामजी M.D.B. तथा श्री कुं० श्यामलाल जी M. D. B. इटावा के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

हम अपने लघु भ्रातृ-युगल श्री बा० रामदयाल जी सगर और श्री बा० रामस्वरुप जी सगर को धन्यवाद देने का लोभ संवरण नहीं कर सकते जिन्होंने ग्रन्थ के लेखन-कार्य में सहायता की है। हम विशेषतः श्री डा० मानिकचन्द्र जी यादववीर को उनकी प्रकाशन तथा आर्थिक सम्बन्धी सहायता के लिये हृदय से धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने गुरुतर परिश्रम से ग्रन्थ का प्रकाशन कार्य किया है।

ग्रंथ की शोभा बढ़ाने में विद्यार्थी रामनारायण निम 'यादवेन्दु' ने अपनी प्रतिज्ञा शीर्षक कविता तथा श्री पं० प्रभुदयाल जी व्यास ने अपनी 'कर्त्तव्य' शीर्षक कविता एवं धन द्वारा, जो ग्रंथ को गौरवास्पद किया है; उसके लिये हम उनके आभारी हैं।

अन्त में हम उन सहायक समालोचकों (Critics) एवं उदार सम्पादकों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकाशित करते हैं, जिन्होंने हमारे ग्रन्थ की समालोचना कर हमें उपकृत किया है।

—लेखक व प्रकाशक

स

BIBLIOGRAPHY.
सहायक-ग्रन्थ-सूची
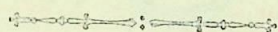
१ जाति अन्वेषण—पं छोटेलाल श्रोत्रिय कृत
२ नीति शतक—योगिराज भर्तृहरि कृत
३ वर्ण व्यवस्था मीमांसा—पं० छोटेलाल श्रोत्रिय कृत
४ यजुर्वेद
५ मनुस्मृति—मनु कृत
६ महाभारत—व्यास कृत
७ रामचरितमानस—महाकवि तुलसीदास कृत
८ चित्र गुप्त उपनिषद्
९ न्याय दर्शन—महर्षि गौतम कृत
१० ब्राह्मण-निर्णय
११ लोमश-रामायण—लोमश कृत
१२ ऋगवेद
१३ भारतीय प्राचीन लिपि माला—लेखक पं० हीराचन्द गौरीशंकर ओझा, महा-महोपाध्याय
१४ ज्ञानसमुद्र—लेखक स्वामी आत्माराम
15 Gazetteer N. W. P. Vol IV By Edwin I Atkinson B. A.
16 Brief Review of Caste System By J. C. Nesfield.
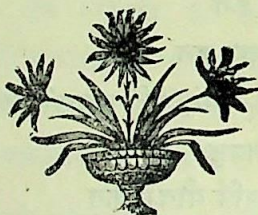
निम्न लेख बा॰ रामनारायण जी यादवेन्दु ने लिखा है और आग्रह किया है कि "यादव-जीवन" के प्रथम पृष्ठ पर उसको छपाया जाय। अतएव यह लेख ज्यों का त्यों ही प्रकाशित कराया जाता है।

—प्रकाशक।
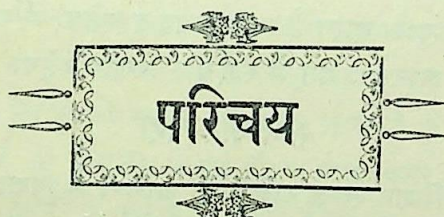
यदुकुल कमल दिवाकर पंडित सुन्दरलाल जी सगर संस्थापक 'श्री जाटव महासभा' व 'जाटव प्रचारक महा मण्डल' इस 'यादव-जीवन' ग्रन्थ के लेखक हैं। आप जाटव वंश के एक क्रान्तिकारी नेता हैं। आपका परिचय देना सूर्य को दीपक दिखाना है परन्तु मेरा हृदय चाहता है कि थोड़ा परिचय अवश्य दिया जाय। मैं अनुभव करता हूँ कि जिस ग्रन्थ का जो पाठक अवलोकन करता है उसके लेखक के परिचय की उसको उत्कट अभिलाषा होती है, अतएव मैंने अपने पूज्य पण्डित जी का परिचय दिया है।

जन्म तथा वंश

यादव-वंश शिरोमणि पं० सुन्दरलाल जी सगर कुलभूषण का जन्म पौष शुक्ला पूर्णिमा संवत् १९४३ विक्रमी को आगरा नगर अन्तर्गत स्थान राजामंडी में हुआ। आपके पिता का नाम श्रीयुत नाथूराम सगर और पूज्य माता का नाम श्रीमती राधादेवी था। सगर कुल अतीत काल में अपने वैभव के लिये प्रसिद्धि पा चुका है। आज भी वह कम गौरवशाली नहीं है। मुझे उन आदर्श माता-पिता के नाम के पहिले 'स्वर्गीय' शब्द लगाते दुःख होता है। आज वह इहलोक में नहीं हैं पर उनका नाम जाटव जगत् में सदैव स्मरणीय रहेगा।

समाज-प्रवेश

आपने मिशन स्कूल राजामंडी आगरा में विद्या प्राप्त की परन्तु धनाभाव से अधिक पढ़ना कठिन था. अतः आपने शिल्प कर्म की शिक्षा प्राप्त की। सं० १९६७ विक्रमी में आपने 'आर्यसमाज' आगरा में प्रवेश किया और अपना प्रेम आर्य साहित्य में लगा दिया। आप पं० लालाराम जी निम्न सहित वैदिक ग्रन्थों का अनुशीलन करते रहे। आपने दर्शनों के भाष्य पर भले प्रकार विवेचन किया है।

श्री जाटव महासभा

एक समय जब कि आप पं० छेदीलाल जी कड़िक के सदन में सांख्य शास्त्र की कथा पढ़ रहे थे सहसा आपके हृदय में जाटव वंशोद्धार का विचार उत्पन्न हुआ। आपने उसी

समय संकल्प किया कि जाटव वंशोद्धारार्थ एक सभा की स्थापना की जाय। अतएव पं० लालाराम जी निम, पं० छेदीलाल जी कड़िक, पं० प्रभूदयाल जी व्यास और डा० मानिकचन्द जी जाटव-वीर के द्वारा कार शुक्ला द्वादशी संवत् १९७३ विक्रमी को राजामंडी आगरा में 'श्री जाटव महासभा' की स्थापना कराई। इस सभा के मुख्य अधिकारी बा० खेमचन्द जी भूतपूर्व एम० एल० सी० को प्रधान और स्वर्गीय बा० चोखेलाल जी कोन्ट्रेक्टर राजामंडी आगरा को उपप्रधान चुना। आपने भी एक सदस्य के रूप में कार्य किया। आपको किसी पद की अभिलाषा नहीं है इसी कारण वंश-हित कार्य में वैयक्तिक स्वार्थ को स्थान देना निंद्य समझते हैं। आपके ही पुरुषार्थ से यदुवंश ने वह गौरव प्राप्त किया है जिसका सं० १९७३ विक्रमी के पहिले स्वप्न भी न था।

सम्पादन कार्य

आप "श्री जाटव महासभा" के अन्य विविधि क्षेत्रों में कार्य करते हुए "जाटव ग्रन्थ-माला" नामी मासिक पत्रिका को सम्पादन करते थे। इसका प्रथम अंक पौष शुक्ला पूर्णमा सं० १९७७ विक्रमी को प्रकाशित हुआ था। इसका मुख्य उद्देश्य यह था कि "श्री जाटव महासभा" के उद्देश्य का प्रकाश करना, जनता को अपने कष्ट सुनाना और जाटव वंश के कर्तव्य कर्मों को बताना। इसके लेख जहां उपयोगी और सामयिक थे वहां प्रमाणिक भी होते थे। भाषा में बड़ा ओज

होता था। यह पत्रिका जाटव वंश में क्रान्ति फैलाने वाली थी। आज आठ वर्ष बाद भी उसके प्राचीन लेखों में नवीनता और स्फूर्ती प्रदर्शन स्पष्ट दीखता है।

अधिवेशन

अप्रैल सन् १९२३ ई० में महासभा का चतुर्थ अधिवेशन आगरा नगर में हुआ। यह वर्ष महासभा के जीवन में बड़े ही संकट का था। इस समय महासभा के कार्य कर्ताओं में मनो-मालिन्य बड़े वेगसे बढ़ रहा था। कुछ अधिकारी अपने पदों को अपनी पैत्रिक सम्पत्ति मानते थे। हमारे चरित नायक इस मनोमालिन्य को अच्छा नहीं मानते थे इस कारण आपने विरोधी जनों के साथ कार्य करना उचित न समझा।

जाटव प्रचारक महामंडल

१ जनवरी सन् १९२४ ई० में आपने "जाटव प्रचारक महामंडल" की स्थापना की। इसी मंडलने आपके "जाटव जीवन" को प्रकाशित कराया जिसके प्रधान श्री पं० प्रभूदयालजी व्यास और मंत्री श्री बाबू रामप्रसादजी थे। जब कि "श्री जाटव महासभा" का पुनरुत्थान हुआ उस समय प्रधान पद का भार भी आपही पर था। अन्त में आपने कोई पद ग्रहण न किया और श्री बाबू मोतीलालजी को प्रधान चुना।

ग्रन्थलेखन

जाटव साहित्य का निर्माण व प्रचार करने में आपने जो साहित्य सेवा की है उसे सभी वंश बन्धु जानते हैं। आपही

ने साहित्य निर्माण कर जाटव जनता का ध्यान आकृष्ट किया है। सन् १९२५ ई० में आपने अमूल्य ग्रन्थ "जाटव जीवन" जिसका तृतीय संस्करण "यादव जीवन" नाम से आपके हाथ में है। यह ग्रन्थ आपके अध्ययन एवं अन्वेषण का फल है। यदि यह कहाजाय कि जाटव जीवन प्रकाशित न होता तो भारतवर्ष में आज हम यादव न कहाते, तो कोई अतिशयोक्ति न होगी।

आपका दूसरा ग्रन्थ 'जाटव प्रथा संग्रह" है। यह ग्रन्थ भी जाटव प्रचारक महामंडल ने ही प्रकाशित कराया था। इसमें अर्वाचीन और प्राचीन जाटव प्रथाओं का संग्रह किया गया है। वास्तव में यह ग्रन्थ जाटव गृहस्थों के लिये एक व्यवस्था ग्रन्थ है।

विजय सन्देश

सन् १९२६ ई० में बा० गोपीलाल जी वकील व बाबू रामप्रसाद जी गोयल वकील के मध्य एक अभियोग चला था। यह अभियोग Election Petition (निर्वाचन नियम भंग करने) के सम्बन्ध में था। पंडित जी ने 'वोट' देते समय अपने नाम के सामने 'यादव' शब्द लिखा बस, यही अभियोग का कारण बन गया। बा० गोपीलाल जी का यह पक्ष था कि पंडित जी 'यादव' नहीं हैं, अतः यादव लिखना अनुचित Illegal है। 'सत्य मेव जयते'। इस अभियोग के सम्बन्ध में आगरा के कमिश्नर आर. एच. एल. क्लार्क (R. L. H. Clarke) महोदय ने अभियोग का जो

निर्णय दिया है उस से सत्यता की विजय का ही समर्थन होता है। आप के निम्न शब्द बड़े महत्त्व पूर्ण हैं—"........ Sunderlal Yadav has written a book (Jatav Jivan) which has been produced expressly to show that as a matter of fact all jatavas are really Yadavas" ... ..यह वंश के लिये विजय का सन्देश है। इसका यदुवंशियों को अभिमान होना उचित है। इस शानदार विजय का सारा श्रेय पंडित जी व उनके 'जाटव जीवन' ग्रन्थ को है इसके लिये आप की व ग्रन्थ की जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है।

उपसंहार

यह सर्वथा असंम्भव है कि मैं संक्षेप में आप के वंश-भक्ति पूर्ण चारित्र्य के निर्माता गुणों पर सूक्ष्म दृष्टि डाल सकूं। पर इतना कहना ही आवश्यक होगा कि आप वंश के एक अद्वितीय नेता-हैं। आप में तत्परता अध्यवसाय, कार्य क्षमता और तर्क-प्रेम आदि गुण हैं, जो यदुवंशियों के लिये अनुकरणीय हैं। आप वंश के जीवन हैं। आपका जीवन वंश के लिये है। वंश का आप से गौरव है। परमात्मा पंडित जी को चिरायु दे जिससे वंश-गौरव प्रसार हो। तथास्तु—

आगरा
वैषाख पूर्णिमा
संवत् १९८६ वि०

लेखक—
रामनारायण निंम 'यादवेन्दु'

लोक मत

धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द जी सन्यासी द्वारा सम्पादित पत्र "सद्धर्मप्रचारक" २५ अप्रैल सन् १९२५ ई० के अंक में लिखा है "जादव जीवन" यह एक अतीव मनोरंजक पुस्तक है। इस ग्रन्थ के लेखक जादव वंश उत्पन्न आगरा निवासी पंडित सुन्दरलाल सगर हैं। यह ७५ पृष्ठों के भीतर लिखा गया है और अपने समय की भावशैली से सर्वथा नवीन परिपाटी पर लिखा गया है। इस ग्रन्थ में विशेषतया पंडित छोटेलाल श्रोत्रिय (जोकि जाति अनवेषण ग्रन्थों के कर्त्ता हैं) के लेख का आश्रय लिखा गया है, इस पुस्तक की सर्वथा नवीनता प्रकट होने पर भी इसमें यह विशेषता है कि बिना प्रमाणों के कहीं पर भी कोई लेख नहीं हुआ। इस पुस्तक में यथार्थ नवीनता और लोकाचार को आश्रय देकर शास्त्र प्रति-

पादित वास्तविक जाति शब्द की मीमांसा का सर्वथा प्रत्याख्यान किया है, परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि तर्क का सहारा पद पद पर पूरी तौर से लिया गया है जो कि लेखक के लिये अतीव सराहनीय और पांडित्यप्रौढ़ता का द्योतक है।

इस ग्रन्थ में यह भरसक प्रयत्न किया गया है कि स्ववंश को ही सर्वथा उच्चता प्रशस्यता दी जाय। इस लिये उपर्युक्त पुस्तक लेखक महोदय की ओर से जाटव वंश को जो कि जटिया का शुद्ध रूप है उच्चता दी गई है। अपने आपको ही विशुद्ध सिद्ध किया है। हम इसकी खण्डनात्मक विशेष समालोचना इस लिये करना उचित नहीं समझते कि इसमें जो भी अन्य जातियों को वर्णशंकर सिद्ध किया गया है वह निर्मूल एवं निष प्रमाण नहीं। परन्तु तो भी हम इतना अवश्य कह सकते हैं कि जिन पुस्तकों और बुद्धि के आधार पर लेखक महोदय ने ऐसा परमोत्साह किया है, क्या उन पुस्तकों और उस बुद्धि ने लोकप्रथा को देखकर जाटव वंश की मीमांसा और समीक्षा में कुछ भी नहीं लिखा अस्तु। वैसे ग्रन्थ नवीन जागृति को पैदा करने वाला अवश्य है और मैं आशा करता हूँ कि यह ग्रन्थ ब्राह्मण आदि समुदाय में अच्छी तरह हलचल मचाने वाला और निरपराध में वेचारे भोले-भाले मनुष्यों को वेद आदि शास्त्रों से वंचित रखने वाले समुदाय के लिये जैसे को तैसा रूप प्रत्युत्तर अवश्य है। अतः इस ग्रन्थ को (बा० रामप्रसाद मंत्री जाटव प्रचारक महामण्डल काज़ीपाड़ा

आगरा) इस पते से अवश्यमेव क़ीमत चार आने में पाठकवृन्द मंगा कर नवीन जागृति से अवश्य परिचित होवें।

—"सद्धर्मप्रचारक"

राष्ट्रीय दैनिक पत्र "वर्त्तमान" कानपुर के यशस्वी सम्पादक पं० दुर्गादत्त पाँड़ेय तथा स्थानापन्न सम्पादक श्री शी० बी० दीक्षित "वर्त्तमान" के एक अक्टूबर सन् १९२७ के अंक में लिखते हैं:—"जाटव जीवन" लेखक पं० सुन्दरलाल सगर, प्रकाशक जाटव प्रचारक महामंडल आगरा। पृष्ठ सं० ७१ मूल्य ।) आना,—प्रस्तुत पुस्तक में जाटव वंश क शूद्र इतिहास लिखा गया है और प्रमाणों द्वारा यह सिद्ध करने की चेष्टा की गई है कि जाटव………… क्षत्रिय हैं। इसमें जाटव वंश के भेद भी दिखाये गये हैं। जाटव वंशी भाइयों को इस प्रकार की पुस्तक को अवश्य संग्रह करना चाहिये।

—"वर्त्तमान"

साप्ताहिक पत्र "आर्य्यमित्र" के सम्पादक कविरत्न पंडित हरिशंकर शर्म्मा अपने २२ दिसम्बर सन् १९२७ के पत्र में लिखते हैं "जाटव जीवन" लेखक पंडित सुन्दरलाल सगर "हमारे जाटव भाइयों की ओर से यह छोटी सी पुस्तक प्रकाशित हुई है। इसमें जाटव वंश की प्राचीनता और उत्कृष्टता सिद्ध करने का प्रबल प्रयत्न किया गया है। साथही हिन्दू जाति के अन्तर्गत प्रायः अन्य समस्त प्रचलित जातियों को वर्णशंकर बताया गया है"।

भूमिका
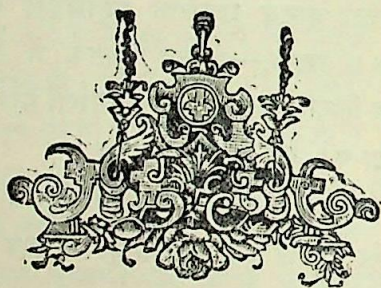
पाठक !

मैंने इस—'यादव-जीवन' ग्रन्थ में यदु भगवान् व उनके वंशज, यादव-वंशियों का दिग्दर्शन कराया है। यह निश्चय है कि प्रत्येक देश, वंश व जातियों का पता उनके इतिहास से मिलता है। अतएव यादव-वंश का इतिहास लेखबद्ध होना आवश्यक है। यद्यपि जाटव-वंश का पूर्ण इतिहास (वर्त्तमान काल में) नहीं है, परन्तु जो कुछ प्राप्त हुआ है उसके आधार पर 'यादव-जीवन' ग्रन्थ की रचना की गई है। जाटव इतिहास का पूर्ण रूप न देखकर जात्याभिमानी (हमारे जाटव वंश पर) अपने कटु वचनों की वर्षा करते हैं। उनके कटु वाक्यों से जाटव-वंशियों का हृदय विदीर्ण होता है लेकिन उनके पास उनको प्रत्युत्तर देने का कोई उपयुक्त साधन नहीं है। इस हृदय-वेदना का अनुभव आर्यबन्धु पण्डित छोटेलाल श्रोत्रिय ने भी किया है। वह अपने 'जाति अन्वेषण' ग्रन्थ में लिखते हैं "हज़ारों जातियाँ भारतवर्ष में ऐसी हैं जिन्हें लोग बड़ी ही द्वेष-बुद्धि से देख रहे हैं और उन हज़ारों जातियों में से किसी को शूद्र किसी को महाशूद्र किसी को वर्णशंकर आदि २ कटु वाक्यों से उनके जी दुखाये जाते हैं और उन

बेचारी जातियों को भी आघात सहने पड़ते हैं कारण कि उनके पास अपनी २ जाति का पूर्ण इतिहास नहीं है, अतएव जिनका इतिहास है उन्हीं का अस्तित्व रहता है और इसी कारण से इतिहास का महत्त्व विद्वानों ने माना है। भारतवर्ष में हिन्दू जातियों का इतिहास न होने की दशा में अनेकों जातियाँ उन्नति करने को खड़ी होती हैं परन्तु वे दबोच दी जाती हैं व स्वयं सकुचा कर विपत्तियों के सामने शरमा जाती हैं। क्योंकि उन्हें अपनी जाति व कुल तथा वंश परम्परा का ज्ञान नहीं है।" वर्त्तमान समय में जादव-वंश की भी ऐसी ही दशा है। कारण कि उसके पास भी अपना लेखबद्ध इतिहास नहीं है। अतएव यादव इतिहास लेखबद्ध होना आवश्यक जानकर मैंने इस ग्रन्थ की रचना की है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में दो भाग (पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध) हैं उत्तरार्द्ध की भूमिका अन्यत्र लिखी है। अतएव उसके विषय में यहाँ लिखना अनावश्यक है। इस पूर्वार्द्ध भाग में सात अध्याय हैं :—

१–यादव-वंश २–यादव-कथा ३–अत्याचारों का दिग्दर्शन ४–वर्ण व्यवस्था ५–जाति-दर्शन ६–नवीन जातियाँ ७–यदुवंश की वर्त्तमान दशा।

प्रथम अध्याय—यह अध्याय प्रश्नोत्तर के रूप में लिखा है। इसमें यह सिद्ध किया गया है कि वर्त्तमान काल के

जाटव प्राचीन यादव हैं (जो परशुराम के समय से शिल्प-कार, वैश्य आदि जातियों में लुप्त थे) यादव-वंश की उत्पत्ति स्वयंभू भगवान् यदु से सिद्ध की गयी है। यादव-वंश के अष्टादश कुलों का भी वर्णन है। गोत्र प्रकरण थोड़ा परवर्तित और विस्तृत रूप से लिखा है। सामुदायिक-रूप से यादव-वंश का कोई एक वर्ण नहीं माना है कारण कि उसमें चारों वर्णों का समावेश पाया जाता है। यह भी सिद्ध किया गया है कि यादव-वंश-भूषण, वीर-शिरोमणि आल्हा-ऊदल यदुवंशी थे। वास्तव में यह अध्याय यादव-बन्धुओं के लिये विशेष लाभप्रद है।

द्वितीय अध्याय—इस अध्याय में 'यादव-कथा' जिसमें राजमंत्री मनु और वीर जटायु (जाटव) जिसने श्रीमती सीतादेवी की रक्षार्थ रावण से युद्ध किया। इसी प्रकार शिल्प-शिरोमणि मय और वीर आल्हा की कथा वर्णन की गयी है।

तृतीय अध्याय—यह अध्याय उन अत्याचारों का दिग्दर्शन कराता है जिनको परशुराम और उनके अनुचर जाटव-वंश पर करते आये हैं।

चतुर्थ अध्याय—इस अध्याय में वैदिक वर्ण-व्यवस्था वैज्ञानिक ढंग से लिखी गयी है, जो कि सर्व देशों में प्रचलित है। वर्ण-व्यवस्था के बिना कोई भी समाज जीवित नहीं रह सकता। भारतवर्ष में अधिक संख्या उन लोगों की है जो जन्म से वर्ण-व्यवस्था मानते हैं, जिसको विदेशी-विद्वान् नहीं

मानते। मैंने इस वर्ण-व्यवस्था का खण्डन और प्राचीन वेदोक्त वर्ण-व्यवस्था का मण्डन इस अध्याय में किया है।

पंचम अध्याय—इस अध्याय में जाति-दर्शन एक बड़ा मनोरंजक रहस्यपूर्ण दृश्य है जिससे वर्त्तमान जातियों, उपजातियों का जीता-जागता चित्र हमारे सामने उपस्थित हो जाता है। जाति शब्द का लक्षण न्याय दर्शन के सूत्रों के आधार पर किया है, जिससे यह विदित होता है कि जाति शब्द वर्णशंकरता का द्योतक है। व्रात्य, शूद्र, द्विज, अनुलोम, प्रतिलोम, अधम व मात्र जातियों का भी वर्णन किया है। जात्याभिमानियों को यह अध्याय अवश्य अवलोकन करना चाहिये।

षष्ठम् अध्याय—इस अध्याय में नवीन जातियों पर थोड़ा प्रकाश डाला है और सिद्ध किया है कि यह वही सप्त जातियाँ हैं जिनका वर्णन मनु से व्यास पर्यन्त मिलता है। यह जातियाँ अपने वर्णशंकर दोष जानकर उस पर पर्दा डालना चाहती हैं और संसार में कोलाहल मचाती हैं, कि वे पवित्र वंशों से भी श्रेष्ठ हैं। इनका निषेध करते हुये यह बतलाया है कि उक्त जातियाँ वास्तव में नवीन जाति नहीं हैं बल्कि यह वही प्राचीन सप्त जातियों के रूपान्तर हैं।

सप्तम अध्याय—इस अध्याय का शीर्षक 'यदुवंश की वर्त्तमान दशा' है। यह अध्याय क्रियात्मक रूप से जाटव बन्धुओं के लिये विशेष उपयोगी है। इसमें वंश की वर्त्तमान

दशा का उल्लेख किया है। शिक्षा, संस्कार, गृहस्थ, पंचायतन, खान-पान, जाटव देवियाँ, सभा, और व्यवहार आदि विषयों पर समालोचनात्मक ढंग से विचार किया है।

पाठकगण! इस भूमिका के समाप्त करने के पूर्व मैं आपसे इतना अवश्य कहूँगा कि जो वंश व जातियाँ किसी समय नीचे थीं वे आज उच्च हैं। जो ऊँचे थे वे नीचे पाये जाते हैं। परन्तु हमारे जाटव बन्धु आज कल भी यही मानते हैं कि नीच से ऊँच होना असम्भव है। उनको यह जानना चाहिये कि भर्तृहरि जी ने स्वरचित 'नीति शतक' में लिखा है–"पतितोऽपि कराघातै रूत्पतत्येव कुन्दुक' हाथ से टकरायी गेंद पुनः ऊपर को उठती है। इसी प्रकार जाटव वंश जिसको विरोधियों ने नीचे गिराया, वह समय पाकर अवश्यमेव उच्च होगा इसमें कोई सन्देह नहीं है।

प्रिय बन्धुओ! आपका जन्म जाटव-वंश की उन्नति के लिये ही हुआ है अतएव आपको उसकी उन्नति के हित तन मन धन से जुटना चाहिये। तभी आपका जीवन सफल होगा। भर्तृहरि जी ने कहा है–"सजातो येन जातेन यातिवंश समुन्नतिं। परिवर्तिनि संसारे मृत को वा न जायते।"

वह (पुरुष) जन्मा जिस के जन्म से वंशोन्नति हो, (अन्यथा इस परिवर्त्तन शील संसार में मर कर कौन जन्म नहीं पाता। इस वचन से यह जाना जाता है कि हमारा जन्म तभी सफल हो सकता है जब कि हम अपने वंश की उन्नति करने

में तत्पर हों। यद्यपि जाटव वंश ने अपने बुद्धि बल तथा वीरता के द्वारा संसार को यह बतलाया था कि वह परोप-कारी और परिश्रम वाला है परन्तु उसको जात्याभिमानी अत्याचारियों ने इतना दबाया हुआ है कि वह अपनी ही उन्नति करने में बलहीन प्रतीत होता है।

वंश रत्नों !

आप अपने पूर्व पुरुषाओं का आदर्श और उनके कर्त्तव्य कर्मों पर विचार करो जिन्होंने अपने बाहुबल से भारत को आदर्श देश बनाया। आप उन्हीं वीर पुरुषों की सन्तान हैं। आप दुराचारी पुरुषों के फन्दों में फस कर अपना जीवन नष्ट कर रहे हो। परन्तु जिस समय आप संगठन शक्ति से अत्या-चारियों को परास्त करने का साहस करेंगे उस समय आपका संसार में मान हो सकता है।

हम मनुष्यता के नाम पर जात्याभिमानी अत्याचारियों से निवेदन करते हैं कि वे हमारे उन्नति पथ में रोड़े न बनें। यदि उन्हें हमारी उन्नति अख़रती ही है तो उसका हमारे पास इलाज़ ही क्या है ? हमारा तो यह दृढ़ विश्वास है कि जाटव वंश ने भारतवर्ष को उच्च और आदर्श देश बनाया और बना सकता है।

अन्त में इस भूमिका को समाप्त करने के पूर्व यह अंकित करना चाहते हैं कि जाटव वंश एक ऐसे युग की प्रतीक्षा में

था कि जिसे बृटिश राज्य और महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्राप्त कराया। आज जाटव वंश के रिपु परशुराम का राज्य नहीं है और न उसके अनुयायियों का ही राज्य है। जिसके भय से हम जाटव वंशी आजभी छिपे ही रहें।

प्रिय बन्धुओ ! हमें अपने वंश की उन्नति करने में तन मन धन से जुट जाना चाहिये। इसी में उसका कल्याण होगा।

हमारा विशेष निवेदन यह है कि पाठकगण इस 'यादव-जीवन' ग्रन्थ के द्वारा जाटव-वंश की श्रेष्ठता को जान कर उसका यश वर्द्धन करेंगे। जो सज्जन इस ग्रन्थ को द्वेष-बुद्धि से नहीं देखेंगे उनको वंश विज्ञान प्राप्त होगा और उनके वंश सम्बन्धी कष्ट भी दूर होंगे। तथास्तु।

स्थान
राजामंडी—आगरा
संयुक्त प्रान्त

वंशानुरागी—
सुन्दरलाल सगर
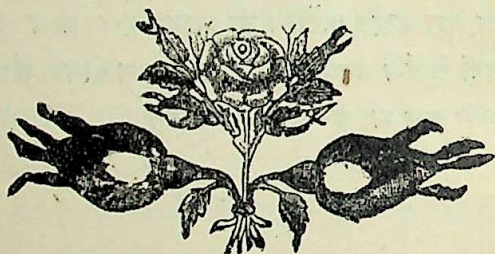
प्रथम अध्याय

यादव-वंश

भारतवासियों को यह जानने की पूर्ण अभिलाषा होती है कि 'आप कौन हैं ?' 'आपकी जाति कौन है ?' 'आप कौन दूध हैं ?' 'आप कौन लोग हैं ?' 'आप कौन ठाकुर हैं ?' इत्यादि। प्रश्नकर्त्ता यह तुलना करता है कि वह उत्तरदाता से नीच है अथवा उच्च। जब कि वह यह जान लेता है कि वह प्रश्नकर्त्ता से उच्च है तब वह उत्तरदाता को नीच दृष्टि से देखता और पुकारता है। ऐसे समय हमारे जादवबन्धु उन विपत्तियों को यथोचित उत्तर न देकर अन्ट शन्ट बातें उड़ा देते हैं। इस अनुत्तरवाद का यह परिणाम होता है कि नीच जातियाँ हमारे

पवित्र यदुवंश को नीच मान बैठती हैं। शोक है कि हमारे जाटव भाई उन जात्याभिमानियों को उचित उत्तर न देकर अपने पवित्र यदुवंश की गणना नीच जातियों में करा बैठे हैं। आशा है कि हमारे यादव-बन्धु निम्नलिखित प्रश्नोत्तर लेख से वंश-ज्ञान प्राप्त करेंगे। इससे जात्याभिमानियों को भी यथोचित उत्तर मिलेगा।

प्रश्न—आप कौन हैं ?

उत्तर—जाटव।

प्रश्न—जाटव कौन होते हैं ?

उत्तर—जिनको प्राचीन काल में यादव कहते थे।

प्रश्न—जाटव का यादव से क्या सम्बन्ध है ?

उत्तर—जाटव यादव का अपभ्रंश (विगड़ा रूप) है।

प्रश्न—क्या प्रमाण है कि आप जाटव हैं ?

उत्तर—ऐतिह्य; अर्थात् हमारे पूर्वजों के परम्परागत वाक्य।

प्रश्न—क्या जाटव शब्द का किसी ऐतिहासिक ग्रन्थ में उल्लेख है ?

उत्तर—हाँ, देखिये, स्वामी आत्माराम द्वारा विरचित "ज्ञानसमुद्र" नामक ग्रन्थ के पृष्ठ १३४-१३५ पर लिखा है। यह ग्रन्थ सम्वत् १९४५ वि० का लिखा है। "द्वापर में सत्रह सौ वर्ष बाकी रहे तब पिंगाक्ष जाटव के उद्धार के लिये अवतार लिया।" "जब जाटव वंशियों का शिवगोत्र से तंत्र लोमश आदि रामायण से प्रमाण लग जाय तब इनके क्षत्रिय होनें में क्या शंका है।"

प्रश्न—क्या पाश्चात्य विद्वानों ने अपने ग्रन्थों में जाटव शब्द का उल्लेख किया है ?

उत्तर—हाँ, श्रीमान् एडविन० टी० एटिकृसन B. A. ने

श्रीमान् J. C. Nesfield महोदय ने स्व-रचित ग्रन्थ Brief Review of the caste system of the North-western Provinces of Agra and Oudh में लिखा है:—

Jatwas

'......that they may be an occupational off-shoot from **Yadu** tribe from which Krishna came.'

जाटव

अर्थात् वह यदुवंश की एक व्यावसायिक शाखा है जिसमें श्री कृष्ण का अवतार हुआ था।

उपरोक्त कथन से भले प्रकार सिद्ध होता है कि वर्त्तमान जाटव, यादव ही हैं जो लोपकाल में शिल्पकार आदि के व्यवसाय करने से जाटव कहाये। इसी कारण उक्त महोदय ने उसे 'व्यावसायिक शाखा' नाम से प्रयुक्त किया है। वास्तव में उपरोक्त कथन सत्य है।

इस परशुराम-युद्ध में यादव पूर्वज अग्रगण्य थे। परन्तु हमारे पूर्वजों की पराजय हुयी और परशुराम विजयी हुये इसी कारण वे अपना 'जाटव' नाम रख कर लोप होगये।

पवित्र यदुवंश को नीच मान बैठती हैं। शोक है कि हमारे जाटव भाई उन जात्याभिमानियों को उचित उत्तर न देकर अपने पवित्र यदुवंश की गणना नीच जातियों में करा बैठे हैं।

लिया।" "जब जाटव वंशियों का शिवगोत्र से तंत्र लोमश आदि रामायण से प्रमाण लग जाय तब इनके क्षत्रिय होनें में क्या शंका है।"

प्रश्न—क्या पाश्चात्य विद्वानों ने अपने ग्रन्थों में जाटव शब्द का उल्लेख किया है ?

उत्तर—हाँ, श्रीमान् एडविन० टी० एटिक्सन B. A. ने अपने ग्रन्थ गजेटियर N. W. P. जिल्द नं० चार आगरा डिवीज़न, जो सन् १८७२ में प्रकाशित हुआ था, में लिखा है:-

"There are two great sub-divisions the Jatwas and Ahrbars. The latter are considered an inferior and illegimate class with whom Jatwas will neither eat nor marry."

अर्थात् इनमें दो बड़े विभाग हैं जाटव और अहरवार। पिछले (अहरवार) छोटी जाति माने जाते हैं जिनके साथ जाटव न खानपान कर सकते हैं और न अन्तर्जातीय विवाह।

प्रश्न—यादव का अपभ्रंश जाटव क्यों हुआ?

उत्तर—परशुराम के भय और अत्याचार के कारण।

प्रश्न—यादव वंशियों को परशुराम का भय क्यों हुआ ?

उत्तर—कारण यह था कि सहस्त्रबाहु ने परशुराम के पिता यमदग्नि का शीश अपने शस्त्र से काट दिया। जब यह समाचार परशुराम को विदित हुआ तो उसने प्रतिज्ञा की कि मैं क्षत्रियों का लोप करूँगा। अन्त में ऐसा ही किया।

इस परशुराम-युद्ध में यादव पूर्वज अग्रगण्य थे। परन्तु हमारे पूर्वजों की पराजय हुयी और परशुराम विजयी हुये इसी कारण वे अपना 'जाटव' नाम रख कर लोप होगये।

प्रश्न—जाटवों का परशुराम से युद्ध हुआ—यह किस प्रमाण से प्रमाणित है ?

उत्तर—ऐतिह्य। देखिये स्वामी आत्माराम कृत 'ज्ञान समुद्र' में स्पष्ट लिखा है—"जाटुवे (जाटव) की सेना परशुराम से लड़ने के लिये तैयार होकर आयी।"

प्रश्न—यादव का अपभ्रंश जाटव किस प्रकार है ?

उत्तर—जिस प्रकार यमुना का जमुना, यशोदा का जसोदा और यज्ञ का जज्ञ अपभ्रंश है।

प्रश्न—यह तो उपयुक्त है कि 'ज' 'य' का अपभ्रंश है लेकिन 'द' का 'ट' किस प्रकार हो सकता है ?

उत्तर—पं० गौरीशंकर हीराचंद ओझा लिखित 'भारतीय प्राचीन लिपि माला' के पत्र संख्या ६-६-१०-११-१३-१६-१८-१६-२३-२५-२७-२६-४०-५७-६६ और ८२ देखिये। प्राचीन समय में वर्त्तमान 'ट' का रूप 'द' था। इससे 'ट' 'द' का अपभ्रंश प्रमाणित होता है।

प्रश्न—क्या वर्त्तमान समय में आपको यादव माना व लिखा जाता है ?

उत्तर—हाँ, देखिये आगरा के कमिश्नर श्रीमान् आर० एल्० एच० क्लार्क महोदय ने अपने एक 'निर्णय' में लिखा है—

"Sunder Lal Yadav has written a book (Jatav Jiwan) which has been produced expressly to show that as a matter of fact all Jatwas are really Yadavas."

अर्थात् "सुन्दरलाल यादव ने एक ग्रन्थ (जाटव जीवन) लिखा है और जो यह दिखाने के लिये प्रस्तुत किया है कि वास्तव में सर्व जाटव यादव ही हैं।"

प्रश्न—क्या आप वही जाटव (यादव) हैं जिनको जादव, जादौं, जाट, अहीर, आभीर आदि कहते हैं ?

उत्तर—नहीं।

प्रश्न—क्या आपके पूर्वज यदु ययाति के पुत्र थे ?

उत्तर—नहीं, वे स्वयंभू थे।

प्रश्न—लोक में जादौं, अहीर व जाटों को यादव माना जाता है, क्या यह सत्य है ?

उत्तर—इसका कोई निश्चयात्मक उत्तर नहीं है।

प्रश्न—भारतवासी ययाति-पुत्र यदु से ही यदुवंश की उत्पत्ति मानते हैं ?

उत्तर—यह उनकी भूल है। कारण कि यदु स्वयं ययाति के पुत्र थे जिनका जन्म किसी अन्य वंश में हुआ। इसलिये इस यदु का वंश नहीं माना जा सकता। हाँ, उनके नाम से उनका कुल व गोत्र माना जा सकता है, वंश नहीं।

प्रश्न—आपके कथनानुसार रघुवंश, भृगुवंश आदि वंशों को भी वंश नहीं मानना चाहिये।

उत्तर—हाँ, उनको रघुकुल, भृगुकुल आदि कहना चाहिये। वास्तव में वे किसी वंश के कुल हैं।

प्रश्न—आजकल के इतिहासवेत्ता उनको वंश ही मानते हैं-क्या यह उचित नहीं है ?

उत्तर—हाँ, यह उचित नहीं है। देखिये! वंश-विज्ञानी इनको कुल ही मानते हैं महात्मा, महाकवि तुलसीदास जी ने "रामचरित मानस" में लिखा है—"रघुकुल रीति सदा चालि आई" इत्यादि। इससे सिद्ध होता है कि वे कुल हैं। वंश नहीं है।

प्रश्न—वंश, कुल, कुटुम्ब और सन्तान किसे कहते हैं?

उत्तर—स्वयंभू की सन्तान को वंश, प्रसिद्ध वंशजों की सन्तान को कुल, निकटस्थ पूर्वजों की सन्तान को कुटुम्ब पुत्रादि को सन्तान कहते हैं।

प्रश्न—स्वयंभू किसे कहते हैं?

उत्तर—जो आदि सृष्टि में बिना माता पिता के उत्पन्न हो।

प्रश्न—यदु वंश के कितने कुल हैं?

उत्तर—अठारह।

प्रश्न—कोई ५६ कुल मानते हैं?

उत्तर—उनका ५६ कुल मानना एक कल्पना है। वास्तव में यदु वंश के १८ ही कुल हैं।

प्रश्न—यदि ५६ कुल मानना कल्पना-मात्र है, तब अठारह कुल कल्पना क्यों नहीं है?

उत्तर—अठारह कुल कल्पना नहीं है। बात यह है कि इतिहास के न जानने वालों की धारणा ५६ कोटि यादव सुनकर पैदा होती है। परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं।

प्रश्न—इस में क्या प्रमाण है कि यदु वंश के १८ कुल हैं?

उत्तर—देखिये महाभारत में लिखा है—"भयेतु समति क्रान्ते जरासन्धेसमुद्यते मंत्रोऽयं मंत्रतो राजन् कुलेष्टा दशावरे" अर्थात श्रीकृष्ण भगवान कहते हैं हम अठारह कुल यादव जरासन्ध के भय से अपने मंत्रियों के साथ सलाह करने लगे। इस से सिद्ध होता है कि यदु वंश के अठारह ही कुल हैं।

प्रश्न—यदुवंश के अठारह कुलों के क्या नाम है?

उत्तर—सगर, निम, पिपिल, व्यास, हरित, अम्ब, कश्यप, तितर, कर्दम, मौर्य, शिव, वरुण, कर्णिक, समी, सोन, पलास, भृङ्गी और जयन्त।

प्रश्न-गोत्र का संचालन कैसे होता है?

उत्तर-गोत्र वंश के किसी प्रसिद्ध वंश धर के नाम से प्रचलित होता है।

प्रश्न-क्या जाटव वंश में सगर, निम, व्यास इत्यादि गोत्र प्रसिद्ध और प्रचलित हैं?

उत्तर-हां।

प्रश्न—हमने नहीं सुना कि जाटव वंश में उपरोक्त गोत्र प्रचलित हैं?

उत्तर-आप के न सुनने का कारण यह है कि जाटव वंश में सगर आदि गोत्रों के विकृत रूप प्रचलित हैं। यथा—

(१) सगर—यह एक प्रसिद्ध राजा थे इनका रूप अति सुन्दर होने के कारण ये सुघर कहाते थे। (२) निम—

यह राजर्षि थे जिन्होने नीम वृक्ष के विज्ञान को जाना। इस लिये वे निंम कहाये। (३) पिपिल-यह ऋषि थे। इनकी प्राचीन काल में विशेष पूजा होती थी। आज कल हिन्दू लोग पीपल को पूजा करते हैं। (४) व्यास-यह अपने समय के अद्वतीय विज्ञानी थे। इन्होने बांस आदि वृक्षों की उपयोगिता का ज्ञान कराया। (५) हरित-यह भी राज ऋषि थे। हरित के तकार का अपभ्रंश नकार होकर हरिन हुआ है। (६) अम्ब-यह एक प्रसिद्ध पुरुष थे। आप ने अम्ब वृक्ष की उपयोगिता को बताया। आपकी सन्तान अम्ब गोत्री कहाती है। (७) कश्यप-आपने कश्यप आदि को जाना इसी कारण वह कश्यप कहाये। (८) तितिर-यह भी एक प्रसिद्ध राजा थे। आपने शत्रु दलों को तितिर बितर किया इस कारण वे तितिर कहाये। (९) कर्दम- यह एक वंश- विज्ञानी थे आप ने कर्दम वृक्ष के लाभों को जाना। (१०) मौर्य-यह एक प्रसिद्ध विजेता थे जिन्होने नाग वंश को विजय किया, मौर्य को मयूर भी कहते हैं। नाग (जन्तु) का विजेता मोर होता है और मोर मौर्य का अपभ्रंश है। (११) शिव-यह एक प्रसिद्ध तपस्वी थे आपने संसार के कल्याणार्थ विशेष तप किया आप के गण (योधा) बड़े बलवान थे। हिन्दू इनकी आज पर्यन्त पूजा करते हैं। (१२) वरुण-यह मनुष्य मात्र के ग्रहण करने योग्य अर्थात सर्व प्रिय थे। वरुण का अपभ्रंश वर है। (१३) कणिक यह—कणों के अन्वेषक थे। (१४) सोन-आपने संसार के व्यौहार के

निमित्त सोना (स्वर्ण) की खोज की और उसका प्रयोग सिखाया। हिन्दू इनकी पूजा श्रावणी पर करते हैं। (१५) समी-यह सेमर वृक्ष के ज्ञाता थे। (१६) पलाश—आप ने संसार के सम्पूर्ण यज्ञों में अपनी आहुतियां दीं अतएव वे पलाश अर्थात ढाक गोत्र से प्रसिद्ध हैं (१७) भृङ्गी—यह भृङ्ग के समान प्रेमी भी थे। भृंगी का अपभ्रंश भिन्डी है। (१८) जयन्त-जादव वंश में यह एक प्रसिद्ध राजा थे। आप ने यदु भगवान की जयन्ति बड़े समारोह से मनायी। इस कारण ये जयन्त कहाये। आप की सन्तान जैंत कहाती है।

पाठक! आप को गोत्रों के सम्बन्ध में इतना और भी जानना चाहिये कि आज कल के नवीन लेखक जो यदु वंश के ५६ कुल मानते हैं। वे देश नदी पहाड़ आदि को भी गोत्र ही मान बैठे हैं। जैसे बुन्देला, गंगापारी, कन्नौजिया, पहारिया इत्यादि। इन निराधार गोत्रों पर विचार करने से विदित होता है कि यह वास्तव में गोत्र नहीं हैं। क्या कोई विद्वान यह मानने के लिये तत्पर है कि नगर, पहाड़ और नदियों से भी कोई मनुष्य उत्पन्न होसकता है। कदापि नहीं हां यह सत्य है कि किसी कारणवश यदुवंशियों को गंगा पारी, अगरिया और भदौरिया आदि कहना पड़े तो वे गोत्र का स्थान नहीं पा सकेंगे।

प्रश्न—क्या यदु वंश के अष्टादश कुलों में परस्पर विवाह सम्बन्ध हो सकता है?

उत्तर—"आपात्ति काले मर्यादा नास्ति" के अनुसार विवाह करते हैं।

प्रश्न—क्या इस सम्बन्ध को आप उचित मानते हैं?

उत्तर—यह ऋषि मर्यादा है। अर्थात् पितृकुल और माता की ६ पीढ़ियों को छोड़ कर विवाह सम्बन्ध होना उचित और वैदिक है।

प्रश्न-यदि कोई जाटव किसी अन्य वंश व जाति से सम्बन्ध करले तो क्या यह कार्य उचित है?

उत्तर-यह कार्य अनुचित है।

प्रश्न-अन्य वर्ण व किसी जाति की स्त्री से यदि कोई जाटव सन्तान पैदा करे तो उस सन्तान का क्या गोत्र होगा?

उत्तर--यह सन्तान पितृ के गोत्र में सम्मिलित होती है।

प्रश्न-क्या इस प्रकार की पैदा हुई सन्तान पितृ सम्पति की उत्तराधिकारिणी होती है?

उत्तर-यदि पिता की आज्ञा व इच्छा हो।

प्रश्न-यदु भगवान का वर्ण क्या था?

उत्तर- क्षत्रिय।

प्रश्न-यदु वंशियों का क्या वर्ण है?

उत्तर—उनका कोई एक वर्ण नहीं है। वह चारों वर्णों में विभक्त हैं।

प्रश्न—यह किस प्रकार माना जाय कि यदुवंशी क्षत्रिय सन्तान हैं?

उत्तर—जिस प्रकार किसी पुरुष के पास फ़ौजी चिन्ह को जानकर यह जाना जाता है कि वह सैनिक (क्षत्रिय) है, उसी प्रकार जादव वंश के संस्कार व रीति-रिवाजों को देख अनुमान होता है कि वे क्षत्रिय-सन्तान हैं।

प्रश्न—यदि अन्य वर्ण का पुरुष अन्य वर्ण की स्त्री से सन्तान पैदा करे तो उस सन्तान का क्या वर्ण होगा ?

उत्तर—सन्तान का कोई वर्ण नहीं होता। किन्तु उसको वंश व जाति नाम से पुकारा जाता है और वर्ण, गुण और कर्मों के अनुसार ग्रहण किया जाता है।

प्रश्न—यदु भगवान कब और कहां उत्पन्न हुये ?

उत्तर—पुरुषोत्तम यदु भगवान् का अवतार त्रिविष्ट में हुआ था, जिसको एक अरब सतानवे करोड़ उन्नतीस लाख उनञ्चास हजार उन्नतीसवां वर्ष बीत चुका है।

प्रश्न—क्या यदु भगवान ने राज्य किया था ?

उत्तर—हां। वह सबसे प्रथम सम्राट हुये।

प्रश्न—क्या प्रमाण है कि वह सम्राट थे ?

उत्तर—इतिहास ! देखिये 'मनुस्मृति' ग्रन्थ यदु भगवान के काल की राजनीति का प्रसिद्ध ग्रन्थ है। हमारे पूर्वज भी यह कहते आये हैं कि मानवशास्त्र हमारा एक माननीय ग्रन्थ है।

प्रश्न—हिन्दू पंडित कहते हैं कि मनुस्मृति हमारा धर्म ग्रन्थ है ?

उत्तर—हां, यह ठीक है। वह हमारा भी धर्म ग्रन्थ ही है।

प्रश्न—क्या कृष्ण भगवान् आपके पूर्वज थे ?

उत्तर—हां।

प्रश्न—अन्य वर्ण की स्त्री का अन्य वर्ण के पुरुष से विवाह सम्बन्ध होने में क्या दोष है ?

उत्तर—प्रथम तो ऐसा करना अवैदिक है, दूसरे उनकी सन्तान निर्बल, और विरोधी गुण-सम्पन्न होने का भय है। यह भी सम्भव है कि उनकी सन्तान भी उत्पन्न न हो। कदाचित् पैदा भी हो तो उसका जीवन, अनियंत्रित रहने का भय है। यदि यह दैवगति से ऐसी सन्तान जीवित भी रहे तो उसका आरोग्य रहना कठिन है।

प्रश्न—क्या कारण है कि ऐतिहासिक ग्रन्थों में यदुवंश का विस्तृत वृतान्त नहीं मिलता ?

उत्तर—थोड़ा उल्लेख पाया जाता है जैसा कि हम ऊपर लिख चुके हैं परंतु विशेष विस्तृत व्याख्या वाले ग्रन्थ परशुराम के अनुचरों ने नष्ट किये ऐसा ज्ञात होता है।

प्रश्न—क्या जाटववंश में कोई तत्कालीन और प्रसिद्ध राजा भी हुआ है जिसका वर्णन वर्त्तमान समय के सुरक्षित ग्रन्थों में मिलता हो ?

उत्तर—हां ! देखिये—आठ सौ वर्ष से अधिक व्यतीत हुये कि वीर-रत्न आल्हा-ऊदल का अवतार महोवे में हुआ। वीर आल्हा ने अपने बाहुबल से माण्डलीक पद प्राप्त किया।

प्रश्न—हिन्दू भाई आल्हा आदि को 'बनाफर' और 'राजपूत' मानते हैं ?

उत्तर—मानना और न मानना उनके बायें हाथ का खेल है। परंतु उस समय जब कि उनके हाथ में तलवार थी तब किसकी शक्ति थी कि वह उनको 'बनाफर' कहता। कदाचित किसी ने 'बनाफर' कहकर भी पुकारा तो इन वीरों ने उन राजाओं की कन्याओं से विवाह किया।

प्रश्न—यह किस प्रकार माना जाय कि आल्हा-ऊदल जाटव थे?

उत्तर—देखिये चन्द्र कवि के 'पृथ्वीराज रासौ' में लिखा है—"हम जादव करि जुद्ध धारि चन्देल उधारे" अर्थात् जिस समय जगनिक ने कन्नौज में वीर-शिरोमणि, यदुवंश-रत्न आल्हा से महोबे आने का आग्रह किया तब उस वीरवर ने उपरोक्त वचन कहे थे, जिनसे स्पष्ट विदित होता है कि आल्हा यादव थे।

प्रश्न—जादव से जाटव ही क्यों ग्रहण किया जाय?

उत्तर—वर्त्तमान काल में कोई जादव (जादौं) को 'दलित' व 'ओछी जाति' बनाफ़र नहीं कहता, परन्तु आल्हा ऊदल आदि वीरों को तत्कालीन राजा 'बनाफ़र' 'ओछी जाति' कह कर सम्बोधन करते थे तब ऐसी दशा में वे जादव (जादौं) नहीं हो सकते।

प्रश्न—क्या आपको किसी विद्वान ने क्षत्रिय लिखा है?

उत्तर—हां! देखिये हिन्दू धर्म महामण्डल के मंत्री पं० छोटेलाल श्रोत्रिय अपने 'ब्राह्मण निर्णय' ग्रन्थ में लिखते हैं कि जाटव—"इस जाति का विवरण प्रमाणों सहित अन्य

ग्रन्थ में लिखेंगे परन्तु यहां इतना कहना पर्याप्त होगा कि यह लोग.....नीच वर्ण में नहीं हैं वरन् क्षत्रिय वर्ण में हैं।"

प्रश्न—जब परशुराम ने क्षत्रियों का लोप किया तब यादव क्षत्रिय कहां रहे?

उत्तर—शिल्पकार, वास्तुकार और वैश्य जाति की शरण में।

प्रश्न—जबकि परशुराम ने क्षत्रियों का हनन किया, उस समय यादव ही शेष रहे-यह किस आधार पर माना जाय?

उत्तर—ऐतिह्य। महाभारत में लिखा है—"जामदग्नियेन रामेण क्षत्रं यदव शेषतं" अर्थात् जब जमदग्नि के पुत्र परशुराम ने क्षत्रियों का हनन किया तब यादव शेष रहे।

प्रश्न—क्या जादव वंश अन्य वंशों से उच्च है?

उत्तर—नहीं! समान है।

प्रश्न—जाति और वर्ण में क्या भेद है?

उत्तर—जाति वर्णशंकरता सूचक है और वर्ण, गुण, कर्म, स्वभाव का बोधक है।

प्रश्न—यदुवंशी किस धर्म को मानते हैं?

उत्तर—मुख्यतया वैदिक धर्म को मानते हैं, परन्तु कोई कोई पौराणिक मतों के जाल में भी फंसे हुये हैं। उन सबका कर्म काण्ड वैदिक रीति के अनुसार होता है अर्थात् वे केवल नाम मात्र के ही पौराणिक हैं।

प्रश्न—हिन्दू आपको हिन्दू क्यों नहीं मानते?

उत्तर—यह उनकी कृपा है क्यों कि हिन्दू 'काफिर' को कहते हैं।

प्रश्न—यादव गृहस्थों का क्या धर्म है ?

उत्तर—माता पिता की सेवा व सन्तान का सपरिवार पालन पोषण करना व शिक्षित बनाना। इसी प्रकार गौ ब्राह्मण आदि की भी सेवा करनी चाहिये।

प्रश्न—क्या गो भक्षकों को दान देना और कथा के नाम पर 'वामनों' को भोज देना, मृतक माता पिता की तेरहवीं करना, विवाहों में धन लुटाना उचित है ?

उत्तर—नहीं।

प्रश्न—क्या कथा-वाचक वामनों को अपना पुरोहित मानना चाहिये ?

उत्तर—नहीं।

॥ इतिः प्रथम अध्याय सम्पूर्णः ॥

द्वितीय अध्याय

यादव कथा

अब हम 'यादव कथा' आरम्भ करते हैं। एक अरब सत्तानवे करोड़ उन्तीस लाख उनञ्चास हज़ार उन्तीस वर्ष व्यतीत हुए, सृष्टि के आदि में पुरुषोत्तम भगवान् यदु का अवतार हुआ। आपने अल्प समय में अंगिरादि ऋषियों से वेदों का अध्ययन किया और स्वराज्य की स्थापना की। समय २ पर जो राज्य व्यवस्था निर्धारित होती गई उसको राजमंत्री मनु ने अपनी 'मनुस्मृति' में लिखा है। यदु भगवान् की सन्तान 'यादव' नाम से प्रसिद्ध हुई। यादव वंश के प्रसिद्ध वंशधरों ने अन्नादि की अन्वेषणा की और शिल्पादि कलाओं का उद्घाटन किया। यादव राज्य धर्मराज्य था जिस में न कोई पापी था न दुराचारी। यादव राज्य की दिन प्रति दिन वृद्धि होती गई जिसका प्रभाव यह हुआ कि अन्य वंश उसके प्रेमी बन गये। यत्र तत्र अन्य वंशों के प्रभावशाली पुरुषों को थोड़े राज्याधिकार दे दिये गये और उनसे राज्यकर की व्यवस्था कर ली। परशुराम के पिता जमदग्नि एक प्रान्त के अधिकारी थे; उन्होंने अपने आपको सबल देख यादव कर देना अस्वीकार कर दिया अतएव राज्याधिकारियों ने यमदग्नि की सम्पूर्ण गौ कुर्क करलीं। जब कि यह समाचार

जमदग्नि को विदित हुआ तो उसने थोड़े योधा साथ लेकर यादव अधिकारियों से युद्ध किया। अन्त में जमदग्नि मारा गया, यह समाचार परशुराम ने सुना। परशुराम ने अपने पिता की मृत्यु और कुर्की का समाचार सुनकर प्रतिज्ञा की— "मैं क्षत्रिय वंश का लोप करूंगा", और उनने ऐसा ही किया। यद्यपि परशुराम ने संसार के समस्त वीर योधाओं से संग्राम किया परन्तु मुख्य युद्ध यादव वीरों से ही हुआ। परशुराम ने निरपराध यादव योद्धाओं का नाश किया तथा उनकी स्त्रियों का सगर्भ हनन किया। इस कारण यादव अपना रूप बदल कर जाटव कहाने लगे। समीपस्थ शिल्पकार व धिग्वण जातियों का पेशा सीख कर उससे अपना जीवन निर्वाह करते रहे।

यद्यपि जाटववंशी लोप काल में परशुराम काल के अत्याचारों से पीड़ित थे, परन्तु वह अपने कर्त्तव्य कर्म को भूल नहीं गये थे। वह जब किसी असहाय व्यक्ति को देखते तो उसकी सहायता करते थे। निम्न लिखित घटनाओं से जान पड़ता है कि जाटव अपनी वीरता और विद्या को भूले न थे। एक समय लंकाधिपति रावण अपनी भगनी शूपणखाँ की नाक को कटी हुई देख कर उसका बदला लेने आरण्य बन में आया जहाँ श्रीराम विराजते थे। जब कि सीता देवी ने अपने पति राम अथवा लक्ष्मण की आज्ञा का उल्लंघन किया तो उस समय रावण ने सीता देवी का हरण किया। रावण सीता को

अपने यान में बिठाकर आकाश मार्ग से जा रहा था और सीता उच्चस्वर से विलाप करती हुई अपनी सहायता की पुकार करती जा रही थी। इस करुणा भरी आवाज़ को वीर जटायु ने सुना जो छुपा हुआ जाटव था। उस यदुवंशी जटायु ने निर्भय होकर रावण को ललकारा और उससे सीता को छिना लिया, परन्तु रावण ने छल करके जटायु को हनन किया और सीता को अपने यान में रख लंका को चला गया। अन्त में भगवान राम इसी मार्ग से पधारे और वीर जटायु की वीर गति देख उसको धन्य माना।

द्वापर के अन्त में एक मय यादव जिसे जात्याभिमानियों ने दानव लिखा है। खांडव वन में निवास करता था। पाण्डवों ने उसके वन में अग्नि लगाई इस कारण वह युधिष्ठिर का क्रोध शान्त करने के लिये अर्जुन के समीप पधारा और वन के जीवों की रक्षार्थ प्रार्थना की। अन्त में उसने युधिष्ठिर के लिये एक ऐसा विचित्र भवन बनाया जो चलता फिरता था। इसी भवन को देखकर दुर्योधन को डाह उत्पन्न हुआ था।

लगभग आठ सौ वर्ष व्यतीत हुए कि हमारे इसी जाटव वंश में वीर शिरोमणि आल्हा ऊदल और मलखान का जन्म हुआ। यह वीर बाल अवस्था से ही होनहार थे। इनकी राजधानी कालिञ्जर थी। समीपस्थ राजा इन वीरों को नीच और बनाफ़र कहकर पुकारते थे। इस कारण उन्होंने अपनी तलवार के बल से उच्चाभिमानी राजाओं की कन्याओं

से विवाह किया जो जादव वंशियों को नीच अछूत कहाने का कारण बना। सत्य है किसी कवि ने कहा है—

"कोउ बली नहीं होत है समय बड़ो बलवान।
भीलनि लूटीं गोपिका वही अर्जुन वही बान॥

यह भी जान पड़ता है कि भगवान श्रीकृष्णचन्द्र का जन्म भी इसी यादव-वंश में हुआ था। आपने अपने कर्त्तव्य कर्मों से संसार को दिखा दिया कि यादव-वंश एक वीरवंश है। दुष्टों का हनन करने के पश्चात् कोल भील आदि जातियों के समीप भगवान शयन कर रहे थे कि किसी दुष्ट ने एक बाण मारा जो भगवान श्रीकृष्णचन्द्र की मृत्यु का कारण बना। आपका बनाया गीता हमारा एक धर्म ग्रन्थ है।

प्रिय जाटव बन्धुओ! आपको लोप हुये दीर्घकाल व्यतीत हो चुका है। अब समय नहीं है आपके लोप रहने और नीच कहाने का। आज आपका शत्रु परशुराम जीवित नहीं है और न उसके दुष्ट अनुयायियों का राज्य है जिसका आपको भय हो। आप निर्भय निशंक होकर अपने प्राचीन वंश के नाम यादव शब्द का उच्चारण कर सकते हैं।

॥ इतिः द्वितीय अध्याय सम्पूर्णः ॥

तृतीय अध्याय

अत्याचारों का दिग्दर्शन
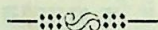
यों तो हमारे पवित्र यादव-वंश पर (परशुराम काल से) घोर अत्याचार होते आये हैं, परन्तु वर्त्तमान समय में भी वह जात्याभिमानियों के अत्याचारों से पीड़ित होरहा है। इन अत्याचारों का एक ऐसा विचित्र रूप है जिसका विस्तार पूर्वक वर्णन करना महा कठिन कार्य है। इन घोर अत्याचारों में से थोड़ा दिग्दर्शन यहाँ कराया जाता है। कौन ऐसा कठोर पुरुष होगा जो इन अत्याचारों को सुनकर विह्वल न हो।

यों तो हमारे हिन्दू भाई परमेश्वर के नामोच्चारण को उत्तम और आवश्यक मानते हैं परन्तु किसी २ स्थान पर जब कि हम उनसे 'राम राम या नमस्ते' करते हैं तो उनके मस्तिष्क की गर्मी का पारा २१० डिगरी को भी पार कर जाता है। यद्यपि उनकी क्रोधाग्नि उनको ही भस्म करने का कारण है तो भी वह यही कहते हैं "अरे लाला क्या राम २ करोगे" ! इसमें कोई सन्देह नहीं है कि हिरण्यकश्यप ने अपने पुत्र प्रह्लाद को 'राम' कहने ही से रोका था इसी कारण वह राक्षस कहाया परन्तु यह दुष्ट जो 'राम' कहने से रोकते हैं उनको कोई राक्षस का पुत्र भी नहीं कहता। दूसरी ओर लिखते हैं "जो नर ख़र कूकर सम जिनके भक्ति राम की नाहीं।"

जब इन परशुराम पंथियों की दृष्टि हमारे वस्त्राभूषणों पर पड़ती है तब इनको दुःशासन का जैसा क्रोध उत्पन्न होता है। यही नहीं बल्कि वह किन्हीं २ जाटव देवियों के आभूषणों को तोड़ डालते हैं। वह नहीं जानते कि एक द्रोपदी का अपमान करने से महाभारत हुआ तब इन जाटव देवियों की आह न जाने क्या करेगी ?

दुष्ट जन जब कभी भोले-भाले जाटव बन्धुओं को चांदनी की छाया में अथवा बिस्तर पर बैठे देखते हैं तो उनके क्रोध की ज्वाला भड़क उठती है। यदि कोई जाटव धूप रक्षार्थ ग्रामीण जात्याभिमानी के समीप उपस्थित हो व सवारी में बैठकर निकले तब तो यह जान पड़ता है कि मानो साक्षात् यमराज वज्र लेकर टूट पड़ा है। कदाचित् कोई निर्बल जाटव अदालत महारानी की शरण लेवे तो वहाँ अधिकतर वे ही सज्जन निर्णय करते हैं जो जाटव वंश से द्वेष करते हैं। अंग्रेज़ सरकार यदि उनकी लिखी तज़वीजों पर विश्वास न करे तो उसके राज्य प्रबन्ध के भ्रष्ट होने का भय है। विचारे दलितों को देवस्थान, कूआ आदि स्थानों पर जाने से रोका जाता है साथ ही हमारे जाटव वंशियों को भी वैसा ही समझा जाता है। वह समझते हैं कि एक जाटव के किसी देवालय आदि स्थान में पधारने से वही दशा होगी जो दशा श्री राम के चरण स्पर्श से अहिल्या देवी की हुई थी। मन्दिरों के बनवाने वाले कहते हैं हमने अपना धन सार्वजनिक कार्य में लगाया है परन्तु उनका मन्दिर एक ठेकेदार (पुजारी) के हाथ में रहता है।

इन मन्दिरों में जो पाप होते हैं उनके दर्शक अनेकों जाटव ही हैं बस इसी कारण हमारे हिन्दू भाई हमारे जाटव भाइयों को उन स्थानों में जाने से रोकते हैं। वह यहां तक कहते हैं " यह मन्दिर व कूआ हमारे बाप ने बनवाया है तुम्हारे ने नहीं " परन्तु जब इनके स्थानों में कभी अग्नि प्रविष्ट होती है तब पुकारते हैं "आओ भाई जाटवो हमें बचाओ यह हमारा कलसा लो और इस कूए से पानी खींचो और आग बुझाओ" ऐसे अवसरों पर उनका सनातन धर्म नहीं मालूम कहां चला जाता है ?

यहां तक देखा गया है कि कोई २ राक्षस जाटव बन्धुओं को शौचार्थ लोटा हाथ में लेजाते देखते हैं तब वह डाकू के समान टूट पड़ते हैं और एक लट्ठ मार कर उसको छिना लेते हैं। यही डाकू बिचारे ग़रीब जाटवों की मौरूसी भूमि छिनाते जा रहे हैं। यह दुष्ट ग़रीब जाटवों से दिन भर परिश्रम करा लेने पर भी उसका फल नहीं देते। वर्त्तमान शासक अपने दौरों की दौर में ग़रीब जाटवों को ही अपना बेगारी बनाते हैं। यह बेगार की दुःखभरी कहानी भी एक दर्दनाक कहानियों में से एक है। इसका पूर्ण चित्र खींचना तो दुर्लभ है परन्तु आवश्यक यह है कि यदि हमारी लेखनी में अधिकार शक्ति उत्पन्न हो तब उस समय उनको प्रत्युत्तर दिया जा सकता है। आजकल इन अत्याचारों के निवारणार्थ संघर्षण भी हो रहा परन्तु अभी कोई सफलता प्राप्त नहीं हुई है। ग्रामीण भाइयों की दशा इन्हीं अत्याचारों

के कारण शोचनीय है। ऐसा जान पड़ता है कि 'जिसका रेरा उसका खेरा'।

लेखक का विचार तो यह है कि भारतीय जातियों को इन अत्याचारों के करने का फल विदेशों में मिल रहा है और मिलेगा, परन्तु हिन्दू समाज अपने अत्याचार कर्म को नहीं भुला सकता। हम अन्त में इतना ही कहना चाहते हैं कि यदि हमने अपने बाहुबल से उनके किये अत्याचारों का फल दिया तो उनको हानिकर होगा। इसलिये उनको अत्याचारों का स्वयं त्याग करना चाहिये। बस इसी में उनकी भलाई है॥

इति तृतीय अध्याय सम्पूर्णः।

चतुर्थ अध्याय

वर्ण व्यवस्था

आजकल भारतवासी वर्णव्यवस्था पर अधिक विचार कर रहे हैं; परन्तु उनका विचार खींचातानी की उलझन में है। वर्णव्यवस्था से हमारा भी अधिक सम्बन्ध है; इस कारण हम भी थोड़ा लिखते हैं। वर्ण का अर्थ-ग्रहण करना है और वह चार प्रकार का है। १—ब्राह्मण २—क्षत्रिय ३—वैश्य ४—शूद्र। वर्ण के विषय में (वेदों में) लिखा है।

प्रश्न—

'यत्पुरूषं व्यदधु कत्तिधा व्यकल्पयन।
मुखं किम्स्यासीत्किं वाहु किमरू पादा उच्येते ॥'

अर्थात्—इस पुरुष (समुदाय को) विशेष कर कितने प्रकार से कल्पना किया जा सकता है। कौन मुखः, वाहु, ऊरू और पाद कहे जासक्ते हैं।

उत्तर—

'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासी-द्वाहु राजन्यः कृतः।
उरु तदस्यद्वैश्यः पदभ्या ँ शूद्रो अजायतः ॥'

इस पुरुष समाज का ब्राह्मण मुख, क्षत्रिय बाहु, उरू वैश और शूद्र पाद समान है। आजकल के विद्वान् भी यही मानते

हैं अर्थात्—'ज्ञानवान को ब्राह्मण' (जिसमें बुद्धि प्रधान हो) 'मनन करने वाले को क्षत्रिय' (जिसमें मन प्रधान हो) 'चिंतन करने वाले को वैश्य' (जिसमें चित्त प्रधान हो) 'अहंकार वृत्ति वाले को शूद्र कहते हैं' (जिसमें अहंकार प्रधान हो) अन्यत्र भी लिखा है 'ब्राह्मण होने में मात पिता कारण नहीं होते। कुल जाति से कोई ब्राह्मण नहिं होता' इसी प्रकार और भी लिखा है—

'जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद्विज उच्यते।
वेदाभ्यासद्भवेद्विप्रो ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः ॥'

अर्थ—जन्म से शूद्र, संस्कारों से द्विज बड़े होते हैं और वेद अभ्यास से विप्र (ब्राह्मण पुत्र) ब्रह्म को जानने से ब्राह्मण होता है।

'विप्राणां ज्ञानतो ज्येष्ठ्यं क्षत्रियाणां तु वीर्यतः।
वैश्या नाम धान्य धनतः शूद्राणामेव जन्मतः ॥'

अर्थ—विप्र (ब्राह्मण का पुत्र) ज्ञान से, बल से क्षत्रिय (पुत्र), वैश्य (पुत्र) धनधान्य से और शूद्र (पुत्र) जन्म से ही वृद्धि को प्राप्त होता है। यह भी लिखा है कि यदि वह अपढ़ और विद्याहीन हों तो—

'यथा काष्ट मयो हस्ति यथा चर्म मयो मृगः।
यश्चविप्रो नधीयानास्त्रोनां विभ्रति ॥'

अर्थ—जिस प्रकार काष्ठ का हाथी, चर्म का (बनावटी) मृग, उसी प्रकार बुद्धि रहित विप्र नाममात्र धारण करता है।

प्रश्न—क्या अन्य वर्ण का पुरुष व स्त्री किसी अन्य वर्ण को प्राप्त कर सकता है ?

उत्तर—हाँ, कर सकता है देखिये मनु भगवान् ने लिखा है—

'शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।
क्षत्रियाज्जतमेवन्तु विद्याद्वैष्यात्त्तथैवच ॥'

अर्थ—शूद्र ब्राह्मण हो सकता है और ब्राह्मण शूद्र, इसी प्रकार क्षत्रिय और वैश्य भी ब्राह्मण व शूद्र आदि वर्णों को प्राप्त कर सकते हैं।

प्रश्न—क्या इतिहास में भी किसी स्थान पर लिखा है कि ब्राह्मण आदि उच्च पदों को किसी शूद्र ने प्राप्त किया ?

उत्तर—हाँ, प्राचीन काल में ऐसा ही होता था और अनेकों ऐसे प्रमाण पाये जाते हैं कि ऊँच से नीच और नीच से ऊँच बने। यथा—

'गणिका गर्भ सम्भूतो वशिष्ठश्च महामुनिः'

अर्थ—गणिका (वेश्या) के गर्भ से उत्पन्न वशिष्ठ महामुनि कहाये।

'व्यासो वशिष्ठो मैत्रयो नारदोः लोमशः शुकः।
अन्येच ऋषियः सर्वे धर्मेणैव शुचेतनः ॥'

अर्थ—व्यास, वशिष्ठ, मैत्र, नारद, लोमश, शुक आदि नीच से ऋषि बन गये।

'औंड्र कारचौंड्र द्रिविण: काम्बोज: यवन: शुक: ।
पारदा पह्लवारचीन: दरद: खस: ॥'

अर्थ—औंड्र, चौंड्र, द्रिविण, कम्बोज, यवन, शुक:, पारद, अपलव, चीना, दरद, खस आदि जातियों के मनुष्य विद्या प्राप्त कर उच्च कहाये।

पाठकगण ! आजकल के नवीन विद्वानों ने वर्णव्यवस्था की छीछालेदर काफ़ी से ज़्यादा कर रक्खी है। कोई कहते हैं वर्णव्यवस्था कर्म से होती है; कोई जन्म से ही मानते हैं और कोई २ वर्णव्यवस्था को राज्याधीन मानते हैं। लेखक वर्णव्यवस्था को ईश्वर कृत मानता है। उसका किसी देश और किसी समय में अभाव नहीं होता। दूसरे देशों में वर्णव्यवस्था का रूप थोड़ा बदला हुआ है। जिसको हम ब्राह्मण कहते हैं। उसको विदेशी प्रोफ़ेसर आदि कहते हैं। इसी प्रकार जिन्हें हम क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, कहते हैं विदेशी उनको सोलज़र, मर्चेन्ट, कुली कहते हैं। यह केवल नाम मात्र का भेद है सिद्धान्त भेद नहीं।

इतिः चतुर्थ अध्याय सम्पूर्ण :

पञ्चम अध्याय

जाति दर्शन

इस अध्याय में जातियों का दिग्दर्शन कराया गया है। आज कल जो पुरुष यह पूछा करते हैं आप कौन जाति हैं, अथवा मैं अमुक जाति हूँ, उनको यह अध्याय ध्यान से पढ़ना चाहिये।

जाति लक्षण—'समान प्रसवात्मिका जातिः' (न्याय शास्त्र) अर्थ—समान प्रसव से (पैदा हुई) आत्माएँ जाति कहाती हैं 'साधर्म्य वैधर्म्याभ्याम् प्रत्य वस्थानं जातिः' अर्थ (समान धर्म) वैधर्म (विपरीत धर्म) दूषण का नाम जाति है। उक्त प्रमाणों से जाना जाता है कि साधारण जन जिनको दोगला या वर्णसङ्कर कहते हैं, संस्कृत वेत्ता उसी को जाति मानते हैं। जाति के सात भेद हैं:—

व्रात्य जाति—अपने वर्ण में व्यभिचार दोषोत्पन्न सन्तान को व्रात्य जाति कहते हैं।

शूद्र जाति—शूद्र वर्ण के स्त्री पुरुषों में अविवाहित सम्बन्ध से जो सन्तान पैदा हो।

द्वि जाति—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य वर्ण के स्त्री पुरुषों की नियोगिक सन्तान।

अनुलोम जाति—उच्च वर्ण का पुरुष तथा नीच वर्ण की स्त्री के व्यभिचार से उत्पन्न।

प्रति लोम जाति—नीच वर्ण का पुरुष तथा उच्च वर्ण की स्त्री के व्यभिचार से उत्पन्न सन्तान।

अधम जाति—दो जातियों के व्यभिचार दोष से उत्पन्न अधम जाति है।

मात्र जाति—माता का ज्ञान हो और पिता अज्ञात हो वह मात्र जाति कहाती है।

जाति भेद
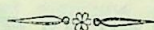
(१) व्रात्य जाति—इस जाति के तीन भेद हैं:—

(अ) ब्राह्मण व्रात्य-अविवाहित ब्राह्मण पुरुष स्त्री की सन्तान
(इ) क्षत्रिय व्रात्य-अविवाहित क्षत्रिय पुरुष स्त्री की सन्तान
(उ) वैश्य व्रात्य-अविवाहित वैश्य पुरुष स्त्री की सन्तान।

इन के विशेष भेद निम्न लिखित हैं:—

ब्राह्मण व्रात्य—भूर्ज कण्टक, आवनत्य, वाटधान, पुष्पध-शेख।

क्षत्रिय व्रात्य—झल्ल, मल्ल, नट, करण, खशः द्रविण।

वैश्य व्रात्य—सुधन्वाव-चार्य, कारूष, विजन्मा, मैत्र, सारस्वत।

(२) शूद्र जाति—यह जाति एक ही प्रकार की होती है। कोई २ विद्वान इसको शत शूद्र भी कहते हैं।

(३) द्विजाति—यह जाति तीन प्रकार की है:—(अ) ब्राह्मण पुरुष और ब्राह्मणी व क्षत्राणी स्त्री के दोष से पैदा हुई

सन्तान। (ई) क्षत्रिय पुरुष और क्षत्राणी व वैश्य स्त्री के दोष से पैदा हुई सन्तान। (उ) वैश्य पुरुष और वैश्य व शूद्राणी के दोष से पैदा हुई सन्तान। यह ६ प्रकार की सन्तान द्विजाति कहाती है।

(४) अनुलोम जाति- यह जाति छः प्रकार की है:— (अ) ब्राह्मण जाति—ब्राह्मण पुरुष और क्षत्रिय स्त्री के व्यभिचार से पैदा हुई सन्तान। (इ) क्षत्रिय जाति—क्षत्रिय पुरुष और वैश्य स्त्री के व्यभिचार से पैदा हुई सन्तान। (उ) वैश्य जाति—वैश्य पुरुष और शूद्र स्त्री के व्यभिचार से पैदा हुई सन्तान। (ऋ) अम्बष्ठ जाति—वैश्य पुरुष और शूद्रा स्त्री की सन्तान। (ऌ) निषाद जाति—ब्राह्मण पुरुष और शूद्रा स्त्री की सन्तान। (ए) उग्र जाति—क्षत्रिय पुरुष और शूद्रा स्त्री की सन्तान।

(५) प्रतिलोम जाति—यह जाति भी ६ प्रकार की है:— (अ) शूत जाति—क्षत्रिय पुरुष और ब्राह्मणी स्त्री की सन्तान। (इ) मागधजाति—वैश्य पुरुष और क्षत्राणी स्त्री की सन्तान। (उ) वैदेह जाति—वैश्य पुरुष और ब्राह्मणी स्त्री की सन्तान। (ऋ) अयोगव जाति—शूद्र पुरुष और वैश्य स्त्री की सन्तान। (ऌ) क्षत्ता जाति—शूद्र पुरुष और क्षत्राणी स्त्री की सन्तान। (ए) चाण्डाल जाति— शूद्र पुरुष और ब्राह्मणी स्त्री की सन्तान।

(६) अधम जाति—इस जाति के १५ भेद हैं:—(अ) आभीर जाति—ब्राह्मण जाति का पुरुष और अम्बष्ठ जाति की

स्त्री की सन्तान (इ) आव्रत जाति—ब्राह्मण जाति का पुरुष और उग्रजाति की स्त्री की सन्तान (उ) धिग्वण जाति—ब्राह्मण जाति का पुरुष और निकृष्ट उग्र जाति की स्त्री की सन्तान। (ऋ) कुक्कटक जाति—शूद्र जाति का पुरुष और निषाद जाति की स्त्री की सन्तान। (ऌ) पुक्कस जाति—निषाद जाति का पुरुष और शूद्र जाति की स्त्री की सन्तान। (ए) कैवर्त्य जाति—निषाद जाति का पुरुष और अयोगव जाति की स्त्री की सन्तान। (ओ) कारावर जाति—निषाद जाति का पुरुष और निकृष्ट अयोगवी की सन्तान। (अं) अंध्र जाति—वैदेह जाति का पुरुष और अयोगवी स्त्री की सन्तान। (क) सोपाक जाति—चाण्डाल जाति का पुरुष और पुक्कस जाति की स्त्री की सन्तान (ख) पाण्डुसोपाक—चाण्डाल जाति का पुरुष और वैदेह जाति की स्त्री की सन्तान। (ग) स्वपच जाति—चाण्डाल जाति का पुरुष और निषाद जाति की स्त्री की सन्तान। (घ) मैत्रेयक जाति—वैदेह जाति का पुरुष और अयोगव जाति की स्त्री की सन्तान। (ङ) स्वापक जाति—क्षत्ता जाति का पुरुष और उग्र जाति की स्त्री की सन्तान। (च) आहिण्यक—निषाद जाति का पुरुष और वैदेह जाति की स्त्री की सन्तान।

(७) मातृ जाति—अज्ञात माता और पिता की सन्तान।

पाठक ! भले प्रकार समझ गये होंगे कि जाति संज्ञा किसी दोष से बनती है। जिन भारतवासियों का यह विचार

है कि 'हम (अमुक) जाति हैं' निश्चय उनके पूर्वज दोगले थे। यह सौभाग्य हमारे जाटव-वंश तथा सूर्य-वंश आदि वंशों को ही प्राप्त है कि वह उत्पत्ति लक्ष से पवित्र हैं। इस अविद्या अन्धकार के समय में भी वह 'जाटव-वंश' ही कह कर पुकारा जाता है। यदि विचारपूर्वक देखा जाय तो यह जातियाँ नीच से नीच सिद्ध होती हैं, क्योंकि इनकी उत्पत्ति दोगलेपन से है।

॥ इतिः पंचम अध्याय सम्पूर्णः ॥

षष्टम अध्याय

नवीन जातियां
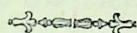
आजकल वह जातियाँ जिनका वर्णन हमने उक्त अध्याय में किया है; अपना नवीन रूप धारण कर उत्पत्ति दोष को छुपाना चाहती हैं। इस कारण वह अपने आपको निम्नलिखित नामों से प्रसिद्ध करती हैं।

(१) स्थान वाचक--मथुरिया, जौनपुरी, मैथिल, अग्रवाल, महोविया, राजपूत।

(२) दिशा वाचक—पछैंया, पुरविया, दक्षिणी।

(३) उपाधि वाचक—वर्मा, शर्मा, गुप्ता, पण्डित, उपाध्याय, दीक्षित।

(४) तीर्थ वाचक—वैष्णव, शैव, जैन, गंगावासी, रामानन्दी।

(५) पदार्थ वाचक—गुलिया, डोहर, रेंगड़, पत्थरफोड़ा।

(६) पेशे वाचक--लुहार, बढ़ई, सुनार, कुम्हार, तेली, तमोली, नाई।

(७) ग्रन्थ वाचक—द्विवेदी, त्रिवेदी, चतुर्वेदी।

इन जातियों ने वास्तविक रूप छोड़कर अपना नवीन रूप धारण किया है। विचार करने से विदित होता है कि यह नवीन जातियाँ प्राचीन जातियाँ ही हैं।

जाति विचार--पाठक! हम इस जाति विषय में आपका

ध्यान अधिक दिलाना चाहते हैं और बताना चाहते हैं कि उक्त शूद्र आदि सप्त जातियाँ ही अपना स्वरूप छुपाकर आजकल नवीन रूप धारण किये हुये हैं, वास्तव में यह नवीन जातियाँ; न जाति हैं न कोई वर्ण हैं। ऐसा जान पड़ता है कि जिनको अपने पूर्वजों का दोगलापन विदित हुआ वही अपना नवीन नाम धरकर एक जाति स्थापित करते गये। नगर नामधारी जातियाँ अपने आपको छुपाने के कारण अपनी प्राचीन जाति का नाम बदलती हैं; परन्तु इन उपाधिधारियों के पूर्वजों ने कभी उपाधि प्राप्त की होगी, लेकिन आजकल वह कोरे ही हैं। तीर्थ वाची जातियाँ अन्य जातियों को हेच मानती हैं, पदार्थ वाची जातियाँ तो आज भी जड़ हैं। वेदी—वेदों का नाम तक नहीं जानते।

लेखक के विचार में यही है कि जो पूर्व काल में दोगली (वर्णसंकर) जातियाँ थीं वही आज अपने आपको सर्वश्रेष्ठ मानने लगी हैं। शोक है यह जातियाँ जाटव-वंश पर आजकल विष उगलती हैं। सत्य है 'काँड़े को अपनी आँख नहीं दीखती, यदि वह अपनी वर्णसंकरी उत्पत्ति को ऊँच मानकर (जाति अभिमानी) ऐसा करते हैं तब तो ईश्वर ही उनका रक्षक है, कारण कि यह रोग असाध्य है। जात्याभिमानियों को धिक्कार है, जो अपना दोष न देखकर पवित्र जाटव वंश को कलंक लगाना चाहते हैं। याद रहे! नीच नीच ही रहेंगे और ऊँच अन्त में उच्च ही होंगे।

॥ इतिः षष्टम् अध्याय सम्पूर्णः ॥

सप्तम अध्याय

यदुवंश की वर्त्तमान दशा

यद्यपि! जाटव वंशी अन्य देशों में भी निवास करते हैं, परन्तु वह विशेष कर भारत देश में बसे हैं। तीन चौथाई से अधिक कृषि कार्य और एक चौथाई से न्यून शिल्पादि कार्य करते हैं। यों तो परशुराम काल ही से ब्राह्मणादि हमारे शत्रु रहे परन्तु इस ज़माने में भी वह हमारे मित्र नहीं हैं। उन्होंने देश में हमारा नम्बर विद्या प्राप्त करने का, अब भी आने नहीं दिया है। जहां तक उनसे बना उन्होंने हमारे विद्या प्राप्त न करने में भरसक यत्न किया; परन्तु जाटव वंश उनके रोके नहीं रुक सका और उसने विद्या में अपना ध्यान लगा ही दिया है। अनुभव ने यह बतलाया है कि निर्धनता के कारण वह अभी थोड़ा और पिछड़ा रहेगा। कारण कि जो धन वह पैदा करता है उसका दुरुपयोग किया जारहा है। कोई ज्यौनार, कोई विवाह उत्सव, कोई आभूषण और कोई दुर्व्यसनों में अपव्यय करते हैं अधिकतर जाटव किसान और दस्तकार हैं। ईसाई और मुसलमान समाज भी उसको हड़प करना चाहती हैं। शिक्षा, विद्या के सम्बन्ध में जाटव वंश अभी दूसरों से बहुत पीछे है। यद्यपि! चन्द जाटव उसको अपनी शक्ति के द्वारा उच्च बनाना चाहते हैं; परन्तु उनकी शक्ति समुद्र में एक रत्ती रंग डालने के समान है।

विद्या—शिल्प, कृषि विद्या को छोड़कर, जाटव वंश में शेष सब विद्याओं का अभाव मात्र है। उसका जीवन केवल शिल्प, कृषि, और मज़दूरी पर निर्भर है चर्म कार्य उसके हाथ से निकल कर मुसलमान और कायस्थ खत्री आदि क़ौमों ने हड़प लिया है। कृषि करने वाले जाटव निर्धन हैं इस कारण वह अन्य धनी लोगों से व्याजू धन ग्रहण करते हैं। यह व्याजख़ोर उनके पसीने की कमाई को ख़ूब लूटते हैं। वह उनसे दो मास में बीस के पच्चीस रुपया प्राप्त कर लेते हैं। जाटव वंश के पसीने की कमाई से व्याजख़ोर, हक़बाज़ ख़ूब मौज़ उड़ाते हैं।

शिक्षा—जाटव वंश में शिक्षा बहुत थोड़ी है और शिक्षकों का पूर्ण अभाव है। बाल शिक्षा केवल जाटव देवियों के हाथ में है, जो अशिक्षित और अनपढ़ हैं। इन अबलाओं को केवल सन्तान पैदा करना आता है, परन्तु वह उनका पालन पोषण नहीं कर सकतीं। पुरुष केवल कमाना, खाना, पहनना और व्यर्थ व्यय करना जानते हैं। यह अपनी सन्तान के साथ अपना कर्त्तव्य केवल विवाह कर देना ही मानते हैं अथवा ज्यौनार जिमाने को अपना इष्ट मानते हैं। सामाजिक शिक्षा का पूर्ण अभाव है।

संस्कार—यद्यपि जाटव वंश में गर्भाधान से अन्त्येष्टि पर्यन्त सभी संस्कार पाये जाते हैं; परन्तु इन संस्कारों का शुद्ध रूप नहीं है। आजकल जाटव विद्वान् उनकी दशा सुधार रहे हैं। गर्भाधान-संस्कार के सम्बन्ध में कोई विशेष कहना

नहीं है, कारण कि उसका देश में भी अभाव है, पुनः जाटव-वंश उसके सम्बन्ध में विशेष क्या जान सकता है। जिस प्रकार अन्य पुरुष सन्तान पैदा करते हैं उसी प्रकार यह भी करते हैं। गर्भाधान केवल देवगति से ही होता है। सत्य तो यह है कि विवाह ही, माता-पिता के सुख मात्र के अर्थ होता है। माता-पिता को धन, वस्त्र, वर्त्तन अच्छे मिलें और बरात को पूड़ी, मिठाई, मिलनी आदि, तब तो विवाह अति उत्तम माना जाता है। वर-कन्या नहीं जानते कि विवाह किसका नाम है। यदि कन्या का पिता बेटे वाले को लग्न, वारौठी, कन्यादान, मिलनी में खूब धन वस्त्र आभूषण न देवे तो विवाह की भले प्रकार छीछालेदर की जाती है। अन्त्येष्टि संस्कार यद्यपि वैदिक रीत्यानुसार ही होता है परन्तु चन्द जाटव मुसलमानों का अनुकरण कर डालते हैं। बाल रक्षा और विवाहादि में शस्त्र धारण किया जाता है। अग्निहोत्र करना प्रत्येक संस्कार में उत्तम माना जाता है।

गृहस्थ धर्म—भारत देश में गृहस्थों का जीवन एक भार रूप हो रहा है, उसी प्रकार एक जाटव का जीवन भी भार रूप ही है। बिचारे गृहस्थी दिन भर परिश्रम करते हैं और जब शयन का समय आता है उस समय लड़ाई झगड़ों का अजीब दृश्य देखा जाता है। वह पंचायतों में व्यर्थ ही बैठ कर रातों बिता देते हैं, कोई नियम पंचायत करने का नहीं है। बाल गृहस्थ अधिक पाये जाते हैं वह निर्बल और निर्बुद्धि सन्तान अधिक पैदा करते हैं। जिस समय उनके माता पिता

उनको गृहस्थ बनाते हैं उस समय वह नहीं जानते कि गृहस्थ क्या है? परन्तु अपनी कामाग्नि को बुझा डालना उनका मुख्य कर्म है। गर्भ स्थापित करने की विधि वह किसी अनुभवी पुरुष से नहीं सीखते। इस व्यर्थ गर्भाधान कर्म से जो सन्तान पैदा होती है उसको अपना सौभाग्य मानते हैं। सत्य तो यह है कि इस गर्भाधान में उनका कुछ भी उत्तरदायित्व नहीं होता परन्तु उन्होंने उसको अपना नित्य कर्म माना है। इसके फल स्वरूप उनकी अनचाही सन्तान पैदा होती है। जो गृहस्थी एक सन्तान का भी पालन पोषण नहीं कर सकते वह दर्जनों सन्तान पैदा कर डालते हैं। प्रसूता बिचारी भोजन वस्त्रों को तरसती हैं, बालक भी भोग्य पदार्थ तथा वस्त्रादि उत्तम नहीं पाता, परन्तु (उन्हीं के) विवाहों में—फुलवाड़ी, नाँच, बाजे, सवारियों में व्यर्थ धन का नाश किया जाता है माता पिता की सेवा विशेषकर लोप होती जा रही है, भ्रातृभाव भी नष्ट हो रहा है, परन्तु स्त्री पूजा का प्रभाव अधिक वेग से बढ़ रहा है।

पंचायत—जाटव वंश में पंचायतों का अधिक प्रभाव पाया जाता है। न्यायाधीश और समर्थक प्रायः अनपढ़ ही होते हैं। पंचायतों का कोई विशेष नियम नहीं है, यह देखा जाता है कि बहुत से व्यक्ति एकत्रित होकर पंचायत विषय पर विचार करते और हू हल्ला मचाते रहते हैं। जिस समय वह बैठे बैठे उकता जाते हैं उस समय किसी मामले को निश्चय करते हैं यदि न्याय करने में असमर्थ होते हैं तब दोनों पक्ष

को मिला देते हैं, उनसे टैक्स (सींख) नाम से वसूल की जाती है। गुप्त व्यवहार का पता नहीं। एक लोटे व शीशे में जल भरकर पंचायत में रखते और उसको छूने का नाम गंगा-धर्म मानते हैं। पंचायतों में कभी कभी गुप्त-धन का प्रयोग भी होता है। विद्वान्, पंचायतों की कठिनाइयों का अनुभव कर रहे हैं; परन्तु उनको अभी कामयावी नहीं हुई।

वंशोत्थान—आजकल जाटव विद्वान् जाटव वंश के उद्धार के लिये विशेष प्रयत्न कर रहे हैं, उसके उद्धार का कोई उपाय अभी दृष्टि नहीं आता। व्यक्तिगत उद्धार के अनेकों मार्ग हैं जिनको हमारे जाटव भाई अपना रहे हैं; परन्तु समष्टी गत रूप से अभी ऐसा कोई प्रयत्न नहीं होरहा है जिसका उल्लेख किया जाय।

खानपान—अन्य लोग सदैव यह कहते रहे हैं कि जाटव-वंशी मांस, मदिरा पान करते हैं, परन्तु खोज करने से विदित हुआ है कि जितना खानपान, अन्य कौमें मांस मदिरा का करती हैं उतना जाटव वंशी नहीं करते। प्रथम तो मांस मदिरा का भाव ही बढ़ा हुआ है जिससे सेवन करना कठिन है, दूसरे परिश्रम करने से पुरुष को अवकाश ही नहीं मिलता। जाटव अधिकतर इतना ही पैदा करते हैं कि जिससे वह अपने बाल-बच्चों का पोषण कर सकें; अतएव उनको मांस मदिरा सेवन करना एक टेढ़ी ख़ीर है। बहुधा अन्य लोग यह अनुमान करते हैं कि जाटव लोग मांसादि की खरीद विशेषतः करते हैं, परन्तु

उनको विदित नहीं है कि यह अन्य क़ौम वालों का कार्य करते हैं, जिसके कारण बदनाम वह (स्वयं) होते हैं।

यादव देवी—अधिकतर जाटव देवियाँ अनपढ़ और अशिक्षित हैं, यह श्याने-दिमानों के जाल में विशेष फंसी रहती हैं। यह अपनी सन्तान के पवित्र मुख पर मुसल्मान फ़क़ीरों से थुकातीं और गंडा-तावीज़ बाँधती हैं। बच्चों की बीमारी का विशेष इलाज इन्हीं सयाने, फ़क़ीर, पोपों से कराया जाता है। यह अपने बच्चों के जन्म काल में ही उनके मुख में गंदा जल डाल देती हैं। सास, श्वसुर और पड़ौसियों से झगड़ा करना यह अपना परम धर्म समझती हैं।

ऊँच-नीच—जाटव भाइयों में एक बहुत बड़ा दोष यह माना जा सकता है कि वह अन्य क़ौम वाले निर्धन व अज्ञानी मनुष्य को भी अपने से ऊँच ही मान बैठे हैं। परन्तु वह अपने जाटव भाइयों को विद्वान् और धनी देखकर भी; ऊँच नहीं मानते। कहते हैं 'मोंठ से मोंठ बड़ी नहीं होती' इनका विशेष विश्वास यह है कि स्ववंश में ऊँचता नहीं है। यह अपने भृत्य को भी उच्च आसन देते हैं। जो बामन इनसे भीख माँग कर खाते तथा प्याउओं पर बैठकर टोंटे दिखाते हैं, यह उनको भी पूज्य ही मानते हैं।

यादव धन का नाश—जाटव भाइयों के पसीने की कमाई के नष्ट होने के तीन प्रबल कारण हैं :—पहला-भिक्षुकों द्वारा, दूसरा-मानार्थ, तीसरा-अज्ञानवश। यह निश्चय है,

लाखों भिक्षुक जाटव वंश से भिक्षा माँग खाने के ही आधार पर कोई अन्य कार्य नहीं करते। वह केवल हमारे जाटव भाइयों का ही खून चूसते रहते हैं। मान के लिये भी हमारे जाटव भाई अधिक से ज़्यादा धन नष्ट (तेरहीं और कथा आदि के नाम पर) करते हैं। अज्ञानता के कारण इन जाटवों को बौहरे भी खूब लूटते हैं। व्याज पर व्याज और बेईमानी का रुपया भी अदा कर ही देते हैं।

फूट का कारण—जाटव वंश में फूट के तीन प्रबल कारण हैं :—मत-मतान्तरों के फन्दे, आपस का द्वेष, अपने आपको बड़ा मानने मनवाने की चेष्टा। यह मतवादी चेलों को यही पाठ पढ़ाते हैं कि 'तुम अपने भाई बान्धव और रिश्तेदारों से सम्बन्ध तोड़ दो, उनके हाथ का छुआ हुआ भोजन कभी न करो। आपस का द्वेष भी इस समय अपनी सीमा पर पहुँच गया है। भाई भाई में फूट और ग़ैरों से प्रेम करते हैं। अपने भाई के स्वत्व कुचल डालने का भी अंकुर पाया जाता है। एक समर्थ जाटव भी अपने निर्बल भाई की रक्षा करने में तत्पर नहीं है।

व्यापार—यद्यपि इस जाटव वंश के हाथ में कोई विशेष व्यापार नहीं है और जो कुछ है भी वह सब धनियों के बाँये हाथ का खेल है। वह कोई व्यापार संगठित होकर इसलिये नहीं करते कि उनको एक दूसरे पर विश्वास नहीं है। जिनको

यह अपना अगुआ बनाते हैं वह अविश्वासपात्र बन रहे हैं। इसी कारण जाटव-वंश के हाथ में कोई विशेष व्यापार नहीं है।

मर्यादा—जाटव बन्धुओं ने अन्य क़ौमों की मर्यादा को भी, अपना रक्खा है, यह उनके लिये एक लज्जा की बात है। जिस स्थान पर अपने बड़ों को मान देना उचित है उस स्थान पर दूसरों को मान दिया जाता है। उनका कथन है कि यह हमारी मर्यादा है। दूसरों को उच्चासन देना और स्वयं नीचे बैठना जाटव वंश की एक विशेष मर्यादा है। अपने पुत्रों को सपेरों, कंजड़ों और फ़कीरों का शिष्य बनाना भी इनके लिये एक मर्यादा ही है।

हिन्दूओं का वर्त्ताव—जाटव वंश के साथ अच्छा नहीं है। यद्यपि अन्न, घृत, गुड़ आदि पदार्थों के छुआछूत में हिन्दू तनिक भी संकोच नहीं करते ; परन्तु वह उनको चिढ़ाने के लिये सदैव घृणित वर्त्ताव करते हैं। यह मानी हुई बात है कि एक हिन्दू दूसरे हिन्दू के हाथ से भोजन नहीं करता, ऐसा ही वर्त्ताव वह हमारे जाटव बन्धुओं के साथ भी रखते हैं।

श्री जाटव महासभा—इस सभा का जन्म जाटव वंश के उद्धारार्थ ही हुआ है। इसकी साखायें अन्यत्र भी हैं ; परन्तु उनका कार्य जैसा होना चाहिये वैसा नहीं हो रहा है। चौधरी और महन्त इसके कार्य में बाधा रूप हैं। यद्यपि सभा ने जो कार्य अब तक किया है वह सन्तोषजनक है

परन्तु थोड़ा होने से न कुछ के बराबर है। कुछ एक विद्वानों का मत है कि गवर्नमेन्ट के सहारे पर ही चल कर जाटव वंश की उन्नति होगी। दूसरे कहते हैं अपने पैरों पर खड़े होने से होगी। इस विषय में अभी कोई उचित निर्णय नहीं हुआ है।

उपसंहार

पाठकवृन्द ! इतिहास की महत्ता एवं आवश्यक्ता पर हमने "भूमिका" में प्रकाश डाला है। इतिहास लेखन कितने उत्तरदायित्व का कार्य है इसको प्रत्येक इतिहास लेखक जानता है। हम "यादव-जीवन" को (सर्वाङ्गपूर्ण) इतिहास ग्रन्थ मानने का दावा नहीं रखते परन्तु इतना अवश्य कहेंगे कि उसमें सच्चे यादव इतिहास की झलक अवश्य है। भविष्य में यदि कोई विचारशील यादव विद्वान् जाटव वंश का विस्तृत इतिहास लिखे, तो उसको इस ग्रन्थ से बहुत सी उपयोगी सामग्री प्राप्त होगी।

हमने जो अब तक इस ग्रन्थ में लिखा है वह सब प्रमाणाधार पर ही लिखा है। सच्चाई को प्रकट करने का पूरा यत्न किया है। यदि हमारे सचाई प्रकट करने ही से किसी को दुःख हो तो उसका हमको खेद है।

यदि सचाई को प्रकट करना भी कोई पाप है, तब हम प्रसन्नतापूर्वक उसका उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेने को तैयार हैं।

जाटव जीवन के प्रथम संस्करण उपसंहार में पृष्ठ ७५ पर जो लिखा था उसीको आज हम इस द्वितीय संस्करण में दुहराते हैं "अब हम इस ग्रन्थ की समाप्ति करते हुए अपने पाठकों से निवेदन करते हैं कि यदि कोई भूल इस ग्रन्थ में (हम से) हुई हो तो उसको कृपा करके हमारे पास लिखकर भेज दें। यदि वास्तव में वह भूल होगी तो उस भूल को सुधार करने का हम यत्न करेंगे।"

यह इस ग्रन्थ का अहोभाग्य है कि इसकी कोई भूल किसी पाठक ने (छपाई सम्बन्धी भूल को छोड़कर) नहीं भेजी। हम पुनः अपने पाठकों से निवेदन करते हैं कि यदि इस ग्रन्थ में कोई वास्तविक भूल हो तो हमको वह सूचित करदें, उसको हम सधन्यवाद शोधने का प्रयत्न करेंगे।

॥ इतिः सप्तम अध्याय सम्पूर्णः ॥

* यादव-जीवन प्रथम भाग सम्पूर्णः *

यादव जीवन
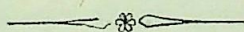
द्वितीय भाग

अनुभूमिका

पाठकगण !

"यादव जीवन" प्रथम संस्करण के छपने के समय यह द्वितीय भाग अपूर्ण था अतएव "जाटव प्रचारक महामंडल" ने प्रथम भाग को ही प्रकाशित करा दिया था। मैंने अब इस द्वितीय भाग को पूर्ण कर दिया है। इस लिये इसको "यादव जीवन" प्रथम भाग के साथ ही प्रकाशित करा दिया गया है।

इस भाग के तीन अध्याय हैं:—प्रथम अध्याय में जाटव वंश के प्रसिद्ध क्षत्रिय चिन्हों का वर्णन किया है, जो प्राचीन काल में बड़े महत्त्वशाली थे। दूसरे अध्याय में जाटव वंश के उन कर्मों का वर्णन किया है जो वैदिक अथवा हमारे पूर्वजों के संचालित किये हुए कर्म हैं। तीसरे अध्याय में जाटव वंश की उन मर्यादाओं का वर्णन किया गया है जिनको जाटव विद्वानों ने समय समय पर स्थापित किया था। अभिप्राय यह है कि इस द्वितीय भाग में जाटव वंश के क्षत्रिय चिन्ह, कर्म और मर्यादा का आश्रय लेकर यह सिद्ध किया है कि जाटव वंश प्राचीन और पवित्र है। सत्य तो यह है कि कोई भी विद्वान् इस न्याय-प्रिय वंश को क्षत्रिय वंश मानने में संकोच नहीं कर सक्ते।

हमारे जाटव भाई "यादव जीवन" द्वितीय भाग से भी उतना ही लाभ प्राप्त करेंगे; जितना कि उन्होंने प्रथम भाग से लाभ प्राप्त किया है। यद्यपि ! आज हम पूर्वजों के स्थापित कर्म मर्यादा को उस रूप में नहीं पाते जिस रूप में उन्होंने स्थापना की। थोड़ा परिवर्त्तन हुआ है परन्तु वह आज भी अति लाभकारी है।

क्या हमारे हिन्दू भाई यह विचार करेंगे कि जिस वंश के अन्दर शस्त्र धारण करना, यज्ञापवीत पहिनना, यज्ञ करना आदि आदि उत्तम कर्म पाये जाते हैं उस वंश को दबाया जाना पाप नहीं है ? यह एक बड़े महत्त्व का स्थान है कि हम यादव वंशी, दीर्घ काल से लोप रहकर भी अपने पूर्वजों की मर्यादा को धारण किये हैं।

पंचायतन निर्णय के नियम थोड़े सूक्ष्म लिखे हैं। यह बतलाने के लिये कि हमारे पूर्वज न्याय करने में विशेषज्ञ थे। इस द्वितीय भाग को विस्तारपूर्वक इस लिये नहीं लिखा है कि साधारण जन भी जाटव वंश के क्षत्रिय चिन्ह, कर्म, मर्यादा से परिचित हैं।

भाद्र शुक्ला पूर्णिमा
संवत् १९८६ वि०

—सुन्दरलाल सगर

द्वितीय भाग

—::—::—

यादव-वंशियों की जैसी पवित्र उत्पत्ति है वैसा ही उनका व्यवहार भी होना चाहिये । इस विषय पर थोड़ा प्रकाश डाला है । यह मानी हुई बात है कि जिसको इतिहास-वेत्ता जानते और मानते हैं कि जिस वंश व जाति को उनका विरोधी उनको नीचा गिराने की चेष्टा करता है या गिराता है; उसको वह नीच से नीच कहकर पुकारता है । यह एक जीता-जागता दृष्टान्त है कि रावण जो ब्राह्मण था उसको हिन्दू क़ौम ने राक्षस व नीच लिखा और माना है । यह एक बड़ी हास्यप्रद बात है कि हिन्दू-समाज की अनेकों उपजातियां जो जादव वंश से नीच हैं वह भी यह दावा करती हैं कि वह उससे ऊँच है । ऐसी भी क़ौम हिन्दुओं में पाई जाती हैं जिनके यहां चर्मकार शस्त्रों की पूजा होती है; उनको चमार कहना पाप नहीं; परन्तु जिस वंश में युद्धास्त्र पूजने का रिवाज़ हो क्या उस वंश को नीच, अछूत, दलित कहना उचित है ? कदापि नहीं । सत्य तो यह है कि संसार के उच्च वंशों में से यादव वंश एक है और उसको उच्च पवित्र मानना चाहिये ।

प्रथम अध्याय
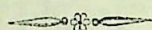
(१) प्रथम चिन्ह—यह है कि राजवंशों में जब किसी बालक का जन्म होता है तब शतघ्नी अथवा भुशुण्डियों के द्वारा कोई विशेष शब्द कराया जाता है जिससे जाना जाता है कि आज अमुक स्थान पर कोई प्रसन्नता उपस्थित है। इसी शब्द विशेष का चिन्ह मात्र हम यदुवंशियों में भी पाया जाता है, अर्थात् जब किसी जाटव गृहस्थ के गृह पर पुत्र उत्पन्न होता है; उस समय जाटव देवियाँ कोई विशेष शब्द कर दिया करती हैं भुशुण्ड व शतघ्नी शब्द के स्थान पर इस शब्द विशेष का यह भाव है कि बालक निर्भीक हो और उसकी प्रवृत्ति समय पड़ने पर युद्ध विशेष की हो।

२—द्वितीय चिह्न—यह है कि जिस समय जाटव-वंशियों में बालक का जन्म होता है; उस समय बालक का चाचा अपने हाथ में धनुष बाण धारण कर प्रतिज्ञा करता है "मैं इस बालक की आजीवन रक्षा करूँगा आपत्ति उपस्थित होने पर" और गृह के मूल द्वार पर एक गज़ा स्थापन कर्म होता है। एक सींक भवन जिसको बाण भवन भी कहते हैं निर्माण किया जाता है जैसा कि वीर अर्जुन ने एक ब्राह्मण पुत्र की रक्षार्थ बनाया था।

३—तृतीय चिह्न—'वायु सेवन' है। इसका समय बालक के जन्म काल के छठे दिवस पश्चात् माना जाता है। इस समय भी बालक का चाचा धनुषबाण धारण करता है और प्रत्येक दिशाओं में एक एक तीर छोड़ता है। मानो वह यह प्रतिज्ञा करता है कि इस बालक की 'मैं चारों दिशाओं से उसकी रक्षा करूँगा'।

४—चतुर्थ चिह्न—'यज्ञोपवीत' का है यह मानी हुई बात है कि यज्ञोपवीत केवल द्विजों का होता है शूद्र अथवा अन्त्यजों का नहीं। जाटव-वंश में यज्ञोपवीत का चिह्न मात्र पाया जाता है। यज्ञोपवीत का धारण करना प्रत्येक जाटव कुमार के लिये अनिवार्य है। इन यज्ञोपवीतधारी कुमारों की 'कार वर' संज्ञा होती है। कोई कोई इनको क्वारे बरुआ भी कहते हैं।

५—पंचम चिह्न—विवाह काल में वर कन्या को शस्त्र धारण करना अनिवार्य है, अर्थात्—विना शस्त्र धारण कराये विवाह संस्कार अशुभ समझा जाता है।

६—षष्ठम चिह्न—बलपरीक्षा नाम से पाया जाता है अर्थात् जब कि विवाह निमित्त वर अपने गृह से पधारता है, उस समय जाटव देवियाँ मंगल गान करती हुयीं एक नियत स्थान पर पहुँच जाती हैं। इसी रंगभूमि में वर की माता अपने पुत्र की बल परीक्षार्थ उपस्थित होती है। प्राचीन काल में लोह धातु के 'ढाल' एक नीचे और दूसरा ऊपर रखकर माता पुत्र को आदेश देती थी "अये पुत्र! इन ढालों

को अपने एक एक पग से चूर्ण कर" वर ऐसा ही करता हुआ निज जननी को शान्त्वना देता था कि वह माता का आज्ञाकारी पुत्र है। वर्त्तमान समय में लोहे के स्थान पर मिट्टी के सरावे (ढाल) काम में लाती हैं।

७—सप्तम चिह्न—वर जब माता को शान्त्वना देकर आगे बढ़ता है, उसी समय वर की बहनें समीप उपस्थित होती हैं और जिस प्रकार पूर्व समय में वाण देने का विधान था उसी प्रकार वह आज भी अपने २ वाण (सींकें) देती हैं। इससे भी यह जान पड़ता है कि प्राचीन काल में जाटव देवियां भी शस्त्र धारण करती थीं।

८—अष्टम चिह्न—वीर आल्हा का स्मरण मात्र है। आल्हा ने मतस्य वेध कर मछलादेवी से विवाह किया था, इस कारण जाटव वंशी एक कढ़ाई में आटे की मछली बनाकर जल में डालते और वर कन्या को आदेश करते हैं कि उस मछली को-कन्या रक्षित और वर हनन करे। जिस समय वर मछली को नियमानुसार वेध देता है उस समय उनको गृहस्थ प्रवेश की आज्ञा दी जाती है। यद्यपि, यह मतस्य वेध प्राचीन काल से होता आया है वीर अर्जुन ने भी इसी के द्वारा द्रोपदी को स्वयंवर में जीता था, परन्तु हम यादव वंशी वीर आल्हा की यादगार मात्र इस चिह्न को मानते हैं।

उक्त चिह्नों के अतिरिक्त और भी बहुत से ऐसे ही चिह्न पाये जाते हैं जो जाटव वंश को क्षत्रिय सन्तान सिद्ध करते हैं।

॥ इतिः प्रथम अध्याय सम्पूर्णः ॥

द्वितीय अध्याय
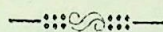
प्रथम अध्याय में संक्षेप से उन चिह्नों का वर्णन किया है, जो क्षत्रियों के ही हो सकते हैं। इस अध्याय में जाटव वंश के उन कर्मों का वर्णन किया गया है, जो कि क्षत्रियों के कर्त्तव्य कर्म हैं। जिन कर्मों को हमने नीचे उल्लिखित किया है वे जाटव वंश का क्षत्रिय सिद्ध करने में अपूर्व प्रमाण हैं:—

१—बाल-रक्षार्थ—प्रसूता की शय्या पर चन्दन बाँधने का नियम पालन किया जाता है और उसी प्रकार एक शस्त्र भी रख दिया जाता है।

२—नामकरण—जाटव वंश में नाम करण दो प्रकार से होता है। पहिला यह कि जाटव पुरुष हवन यज्ञ करने के पश्चात् बालकों के उत्तम नाम रखते हैं। जैसे देवेन्द्र, सुरेन्द्र, वीरेन्द्र तथा बालिकाओं के विद्या, सावित्री, शान्ति, सरस्वती इत्यादि।

दूसरे, टकापंथी हिन्दू पंडितों के द्वारा मीन-मेषी नामकरण कराते हैं। जैसे नकटा, बूचा, घसीटा इत्यादि। यद्यपि आजकल जाटव-पंडित अति उत्तम नाम रखते, परन्तु हमारे जाटव-बन्धु अभी नामकरण के महत्त्व को नहीं समझे हैं।

३—बाल पर्यटन—बालक के जन्म दिवस के पाँचवें, सातवें व ग्यारहवें दिवस कराया जाता है। इसी दिवस गृह-

शुद्धि और प्रसूता का अन्तिम 'स्नान' होता है। उत्तम समय आने पर प्रसूता अपनी सखियों समेत किसी जलाशय के निकट पहुँचती हैं और जल-दर्शन (कूप-दर्शन) करके पुनः लौट आती हैं।

४—अन्नप्राशन—उस समय कराया जाता है जब कि बालक अन्न ग्रहण करने के योग्य हो जाता है। इस अवसर पर धनी लोग अपने बन्धुओं को प्रीति-भोज देते हैं और उपस्थित जन बालक को चिरंजीव रहने का आशीर्वाद देते हैं।

५—मुण्डन—इस संस्कार के कराने का भी नियम पालन किया जाता है। बालक के गर्भित केशों का क्षौर नापित करता है और उन केशों को किसी पवित्र स्थान नदी व सर के किनारे गाढ़ दिया जाता है।

६—कर्णवेध—कानछेदन यह संस्कार उस समय किया जाता है जब कि बालक और बालिका किशोरावस्था को प्राप्त करते हैं। यह भी एक वैदिक संस्कार है।

७—गुरु-मंत्र—प्रत्येक यादव को प्राप्त करना अनिवार्य है। यदि कोई यादव कुमार गुरु-दीक्षा से दीक्षित नहीं होता, तो उसका विवाह संस्कार अशुभ समझा जाता है।

८—विवाह—यादव-वंश में सर्वोत्तम और मुख्य कर्म माना जाता है। माता-पिता का सन्तान के लिये यही कर्म मुख्य है कि वह अपनी सन्तान का विवाह करदे। आजकल

जाटव विद्वान् इस संस्कार को गौण मानते हैं। विवाह संस्कार वैदिक और पौराणिक दोनों प्रकार से होते हैं। अधिकांश जाटव (यादव) कुमार और कुमारियों के विवाह संस्कार की रचना को छोड़ कर मीन-मेष राशि के विवाह ही करते हैं। हिन्दू पंडित जो समय सप्तपदी (फेरों) का निश्चय करते हैं; यादव ठीक उसके विपरीत इस सप्तपदी कर्म का सम्पादन करते हैं। शीत, उष्ण और वर्षा काल का भी कोई विचार नहीं किया जाता है। यादव विद्वानों ने यथाशक्ति इस मीन-मेषी (पौराणिक) विवाह को कुचल डालने का प्रयत्न किया है और वे इस दिशा में थोड़े सफलीभूत भी हुये हैं। जाटव-पंडित वैदिक रीत्यानुसार विवाह संस्कार कराते हैं परन्तु चौधरी लोग फेरे और चरण-स्पर्श करा देते हैं।

विवाहों में दान का विशेष प्रभाव बढ़ रहा है। लग्न, बारौठी, और मिलनी के नाम पर खूब धन पानी के समान लुटाया जाता है। वर कन्या दोनों पक्ष निज निज बांधवों को भोज देते हैं। बाल-विवाह के विपरीत आन्दोलन आरम्भ हुआ है। बालविवाह के ही कारण कुमारी को अधिक समय तक माता-पिता के गृह रहना पड़ता है। कन्या को माता-पिता और श्वसुर के घर आने जाने में विशेष व्यय होता है। भात पछ में कन्या-पक्ष को वस्त्र आभूषण तथा मुद्रा दान देने पड़ते हैं। इस दान के ग्रहण-कर्त्ता कन्या के विरोधी भी होते हैं। श्रावण मास में 'सोहगी' बुलाना भी अनिवार्य ही है।

९—मुख्य--विवाह—इस के दो नियम हैं। वर-पक्ष जब चाहें तब अपने ही घर पर उत्तरार्द्ध संस्कार अर्थात् द्विरागमन कर सकता है। यदि कन्या-पक्ष अपने ही गृह से कन्या का गौना करना चाहे तब नियमानुकूल नियत तिथि पर कुछ वर यात्रियों द्वारा द्विरागमन संस्कार होता है। कन्या-पक्ष को कुछ न कुछ दान देना अनिवार्य है। जब कि कन्या अपने पति को प्राप्त होती है उस समय यादव-महिलाएँ वर-कन्या का मस्तक स्पर्श कराती हैं। इसका यह अभिप्राय है कि वर-कन्या पुत्रेष्टि-यज्ञ करें।

१०—गृहस्थ धर्म—जाटव वंशियों का एक मुख्य धर्म है यह प्रत्यक्ष है कि जाटव वंशी अधिक परिश्रमी हैं। परन्तु उनकी शिक्षा का कोई उत्तम उल्लेखनीय प्रबन्ध नहीं है। नाम मात्र का गृहस्थ उपदेश होता है, वह भी जाटव देवियों के द्वारा। यह गृहस्थी गर्भाधान की शिक्षा अधिकतर बाल सखा और पशुओं से सीखते हैं। जाटव गृहस्थ अतिथि और भिक्षुकों का अधिक सन्मान करते हैं।

११—अन्त्येष्टि—यद्यपि अधिकांश में जाटवभाई अंत्येष्टि कर्म वैदिक रीत्यानुसार ही करते हैं। परन्तु उनमें कोई कोई जाटव ऐसे भी हैं जो मत-मतान्तरों के भ्रम जाल में पड़कर मृतक लाश को गड्ढा खोद कर दबा देते हैं।

॥ इतिः द्वितीय अध्याय सम्पूर्णः ॥

तृतीय अध्याय

द्वितीय अध्याय में जाटव वंश के कर्त्तव्य कर्मों का वर्णन किया है। अब इस अध्याय में उसकी मर्यादा का वर्णन किया जाता है। जाटव मर्यादा दो प्रकार की है एक सामान्य और दूसरी विशेष है। सामान्य मर्यादा के दो भेद किये गये हैं। पहिली विवाह मर्यादा और दूसरी व्यवहार मर्यादा।

१--विवाह—अक्षत वीर्य कुमार और अक्षत योनि कुमारी का ही होता है।

इसके विशेष नियम निम्न प्रकार हैं—(अ) कन्या-कुमार के दर्शन करना अनिवार्य है, परन्तु कोई कोई जाटव मध्यस्थ पर ही विश्वास कर लेते हैं। (इ) टीका—इसमें कन्या पक्ष वरको यथा शक्ति मुद्रा भेट देता है। (उ) तिथिपत्र के साथ अन्न वस्त्र और मुद्रा भी भेट किये जाते हैं। (ऋ) वर का यज्ञोपवीत (जनेऊ) करना विशेषतः चौधरियों के हाथ में है। वे इसको '(डोरिया) नाम से पुकारते हैं। (क) वारौठी—अर्थात् शुभागमन के उपलक्ष्य में कन्या-पक्ष वर-पक्ष को वस्त्राभूषण और पात्र भेट करते हैं (ख) फरी में वर-पक्ष कन्या को वस्त्राभूषण देता है। (ग) विदाई के समय दोनों पक्षों का "सम्मेलन" होता है जिसको ग्राम्य भाषा में मिलनी कहते हैं। इसमें

कन्या-पक्ष को यदि धन लेने की आवश्यकता हो तो वह समुचित धन लेता है। परन्तु उसको नियत धन और वस्त्र देना आवश्यक है।

२—पुनर्विवाह—इसकी विधि विवाह के समान है।

३—साधारण विवाह—इसमें कन्या स्वयं वर के गृह जाकर कर अपना विधिपूर्वक संस्कार सम्पन्न करती है। परन्तु लग्न से मिलनी पर्यन्त वेही कर्म बर्ते जाते हैं जो विवाह के हैं।

४—विधवा विवाह—यदि विधवा स्त्री अपना विधवा विवाह करना चाहे तो विवाह करना उचित और मर्यादित माना जाता है। परन्तु स्त्री पुरुष की स्वीकारी आवश्यक है। वर-पक्ष विधवा को वस्त्र और आभूषण विवाह-वत् ही देता है। परन्तु संस्कार विवाह-वत् नहीं कराया जाता है। अन्त में कन्या-पक्ष वर-पक्ष को मिलनी व भेंट देता है।

५—स्वयंवर विवाह—इस विवाह में स्त्री और पुरुष को स्वतंत्र अधिकार प्राप्त हैं। वे चाहें तो स्वयंवर विवाह कर सकते हैं। परन्तु निज बांधवों को प्रगट करना उचित है।

नोट—प्रत्येक विवाह में हवन, यज्ञ करना और निज बांधवों को प्रति-भोज देना आवश्यक है।

मर्यादा
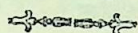
इसके मुख्य भेद दो हैं। पहिले को सामान्य और दूसरे को विशेष कहना चाहिये। सामान्य मर्यादा यह है कि पति-पत्नि, पिता-पुत्र, भ्राता-भगिनी और बांधवों का सामान्य व्यवहार; दूसरी अन्य पुरुषों से सद्व्यवहार। पत्नी के लिये यह विशेष नियम पाया जाता है कि यदि वह विधवा होने पर अपना दूसरा पति नियत न करे, तो मृतक पति की सम्पत्ति की वही उत्तराधिकारिणी होती है। यदि मृतक पुरुष के पुत्र और पत्नी न हो तो उस अवस्था में पुत्री को ही उत्तराधिकार मिलता है। विशेष अवस्था में बांधव उत्तराधिकारी समझे जाते हैं।

विशेष मर्यादा
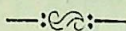
यह एक प्राचीन मर्यादा है। यद्यपि हमारे जाटव भाई इस मर्यादा का उचित उपयोग नहीं करते हैं तथापि उसके नियम ऐसे उपयोगी हैं कि जिनसे अवश्य ही लाभ होता है। यदि हमारे जाटव भाई इस मर्यादा को नियमानुकूल प्रयोग में लावें तो निश्चय उनका धन, समय और शक्ति व्यर्थ बर्बाद न हो।

पंच लक्षण

१—अभियोक्ता—जो अभियोग (मामले) को उपस्थित कर न्याय चाहता है।

२—अभियुक्त—जिस पर अभियोग उपस्थित किया जाता है।

३—साक्षी—घटना का दर्शक।

४—नीतिज्ञ—जिसने जाटव नीति का अध्ययन किया हो।

५—न्यायाधीश—प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से मामले की परीक्षा करके निर्णय करने वाला।

नोट—न्यायाधीश की आज्ञा का पालन करना प्रत्येक वादी-प्रतिवादी का धर्म है।

निर्णय के नियम

१—पंच-आज्ञा उल्लंघन—झूँठी गवाही, झूँठा बयान, पंचायत सूचना की अवहेलना, पंचायत में न आना, च्युत का साथ देना, स्त्री व बालक के साथ कुचेष्टा करना, झगड़ा और चुगली करना इत्यादि के विषय में ५) से ११) तक अर्थ दण्ड किया जाता है।

२—मार-पीट करना—गाली देना, हास्य करना, आदि अपराधों में ५) से ११) तक दण्ड होता है।

३—नीति-विरोध, वृद्ध पुरुषों का अपमान करना, लाठी से मारना, अपनी प्रतिज्ञा की हानि करना, दूसरों को अकारण हानि पहुँचाना, जाटव मर्यादा भंग करना, अपराधी की सहायता करना, धर्म के विरुद्ध भड़का कर अत्याचार फैलाना, भ्रष्ट आचरण कराना, उद्दंडता से किसी के घर में घुसना, प्रतिष्ठित जन की मानहानि करना, न्याय के उप-

लगन में रिशवत लेना, किसी से अनुचित कहना व मद्य-पान कर गाली देना, विवाह के सिक्के का अकारण त्याग करना इत्यादि अपराधों में ११) से ५१) रुपये तक अर्थ-दण्ड होता है।

४—नग्र-विरोध, मान्य पुरुषों से मार-पीट, निज वंश में व्यभिचार, विवाह-विच्छेद, परस्त्री हरण, उन्नति मार्ग में बाधक होना, छल और विश्वासघात करना इत्यादि अपराधों का दण्ड २१) रुपये से १०१) तक होता है।

५—स्त्री व बालक भगाना या बेचना, मुख भ्रष्ट करना, इत्यादि में ५१) से २५१ अर्थदंड तक होता है।

६—दण्डाज्ञा उल्लंघन करना, इन्द्रिय व अवयव नष्ट करना, पंच आज्ञा न मानना, किसी का द्रव्य व धन न देना, और गौ-वध आदि में वंशच्युत व समुदाय च्युत किया जाता है।

उपसंहार

यों तो किसी जाति व वंश की उच्चता की कसौटी के अनेकों उपकरण हैं परन्तु उनमें साहित्य और इतिहास को ही प्रधानता दी जाती है। जिस वंश व जाति के पास अपना इतिहास और साहित्य उच्च कोटि का होता है उसका उच्च होना स्वयं-सिद्ध है। वंश व जाति के जीवन पर सामाजिक रस्म-रिवाजों का विशेष प्रभाव पड़ता है।

निस्सन्देह हम यह कह सकते हैं कि हमारी वंश-प्रथाएँ बड़े महत्त्व की हैं। इन्हीं विचारों को दृष्टि में रख कर हमने यादव जीवन द्वितीय भाग की रचना की है। इन प्रथाओं का जाटव वंश से घनिष्ट सम्बन्ध है। इसलिये प्रत्येक जाटव-बन्धु को उनका जानना आवश्यक है।

अन्त में हम इस उपसंहार को समाप्त करते हुए अपने पाठकों से निवेदन करते हैं कि वे इस ग्रन्थ को विचार पूर्वक अवलोकन करें तभी उनको वंश-ज्ञान प्राप्त करने और अपने आप को क्षत्रिय सन्तान मानने का लाभ होगा।

॥ इतिः तृतीय अध्याय सम्पूर्णः ॥

※ इतिः यादव-जीवन द्वितीय भाग सम्पूर्णः ※

परिशिष्ट

'सुधार'
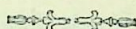
यह दृढ़ निश्चय है कि 'सुधार' पुराने से नवीन बनाने वाला एक उत्तम साधन है; परन्तु देश और वंश के अनुकूल 'सुधार' होना चाहिये। कोई भी 'सुधार' हो लेकिन वह कुल मर्यादा के विपरीत न हो। हमारे जाटव वंश में सर्व प्रथम विचारों का 'सुधार' होना आवश्यक है; तत्पश्चात् वाक् सुधार हो सकता है। विचार और वचन सुधार होने से हम प्रत्येक सुधार आसानी से कर सकते हैं।

आजकल हमारे जाटव बन्धु (जो अन्य क़ौम के मनुष्यों ने बहकाये हैं) यह कहते हैं कि "न कोई ऊँच से नीच हो सकता है और न नीच से ऊँच; अतएव (हम भी) जैसे ईश्वर ने उत्पन्न किये हैं वैसे ही रहेंगे" यह उनका कथन एक प्रकार का बाल हठ है; जब कि एक जाटव ईशाई मुसलमान व किसी अन्त्यज़ के हाथ का भोजन खा लेता है उसको वंशच्युत किया जाता है; पुनः यह किस प्रकार माना जाय कि नीच से ऊँच ऊँच से नीच नहीं हो सकते। ईश्वर ने किसी को ऊँच उत्पन्न किया है और न नीच, प्रत्युत उसने सब को समान उत्पन्न किया है।

यदि नीच ऊँच पन जन्म से माना जाय तो भी हम नीच नहीं हो सकते; कारण कि यादव वंश एक श्रेष्ठ वंश है। कदाचित् नीच ऊँच कर्म प्रधान माना जाय तब तो हमारे जाटव वंश में सर्वोत्तम कर्म पाये ही जाते हैं। उसमें न विधवाओं के गर्भपात होते हैं और न रंडियों, बेड़नियों के नाँच। सत्य तो यह है कि जाटव वंश सर्व प्रकार के कुकृत्यों से बचा हुआ है।

जाटव विद्वानों को चाहिये कि वह अपने बन्धुओं को यह पाठ पढ़ादें कि आपको ईश्वर ने नीच उत्पन्न नहीं किया; आपके पूर्वज श्रेष्ठ थे और यशस्वी थे; उनका पुण्य संसार में अभी शेष है। आपको अपने पूर्वजों के पद पद पर चल कर अपनी उन्नति करनी चाहिये, इसी में आपका कल्याण होगा।

हमको 'कर्म सुधार' करना भी आवश्यक है। यद्यपि! जाटव वंश में जो कर्म होते हैं वह प्राचीन और वैदिक हैं; परन्तु उनका थोड़ा रूप परिवर्त्तित है यथा विवाहादि संस्कारों में हवन यज्ञ आदि (विवाहों में हवन यज्ञ होना अनिवार्य है, इसी प्रकार अन्य उत्सवों के समय भी इन हवन यज्ञों को 'सुधार' कर करना जाटव विद्वानों का कर्त्तव्य कर्म है)।

यदि हम अपने सम्पूर्ण कर्म काण्ड पर दृष्टि डालें तो यही विदित होता है कि हमारे कर्म वैदिक हैं देखिये! विवाहों के पूर्व यज्ञोपवीत और गुरुदीक्षा प्राप्त करना प्रत्यक यादव के लिये अनिवार्य है। इसी प्रकार हमारे प्रत्येक कर्म वैदिक हैं और जो नवीन कर्म हैं वह यत्र तत्र हैं सर्वत्र नहीं।

अब आप विचार करें कि जिस वंश में उत्तम कर्मों के 'चिन्ह' पाये जाँय क्या वह दूसरे वंशों से कनिष्ठ है? कदापि नहीं। कदाचित कोई कूढ़ बुद्धि वाला अज्ञानी जन अपनी तुच्छ बुद्धि का परिचय देने के निमित्त यह भी लिखे व कहे कि जाटव वंश कनिष्ठ वंश है उसकी बुद्धि पर हमको तरस ही आवेगा। कारण कि उसको पता ही क्या है कि जाटव वंश ने अपने परिश्रम के बल से भारत का गौरव रखा है।

यह मानी हुई बात है कि हमको अपने रहन-सहन और भाषा-व्यवहार में 'सुधार' करना होगा। हमें दृढ़ता से पवित्रता देवी का पाठ पढ़ना होगा। हमने जो गुरुदीक्षा प्राप्त करते समय एक पदार्थ का त्याग करने की प्रतिज्ञा की थी; वह पदार्थ वही होना चाहिये जिसका त्याग शास्त्र और विद्वान कराते हैं।

वर्त्तमान काल में जो अपने जाटव वंश में गुरुमत फैल रहा है; उसका विरोध करना होगा। कारण कि आज कल के गुरुमत से जाटव वंश में दासता (गुलामी) पैदा होती है। उसको वीरता की दीक्षा लेनी होगी। नाम मात्र की मुक्ति का त्याग करना होगा।

न्याय प्रणाली को भी 'सुधार' की आवश्यक्ता है। जिन मौरूसीदार चौधरियों ने अपने नाम दमामी पट्टा लिखाया हुआ है, उसको फाड़कर फैंक देना होगा। प्रत्येक ग्राम और शहरों को अपने सुधारके निमित्त एक कमेटी बनानी होगी और नियम जो वंशोपकारी प्रतीत हों उनको मानना होगा।

प्रत्येक जाटव सुधारक, साधु, सन्यासी को वंशोपकारी कार्य करना होगा। उनको जाटव कुमार और कुमारियों को स्वतन्त्रता देवी का दर्शन कराना होगा। विद्या तथा बुद्धि को प्रज्वलित करना होगा 'जाटव-वंश' को शीघ्र से शीघ्र अपना प्राचीन रूप 'यादव वंश' प्रकट करना होगा।

हमको अपने मान-मर्यादा का ध्यान रखना होगा। जिस स्थान पर हम दूसरों को मान देते हैं वहां अपने मान की रक्षा करनी होगी। जो साधु-समाज क़ौमी ख़्याल से ऊँच नीचता माने उनका परित्याग करना होगा। उन साधुओं ब्राह्मणों का अनादर करना होगा जो जाटव वंश को नीच अछूत कहें और माने। लीलावती कलावती की कहानियों को अब कथा नहीं मानना होगा, न मीन मेषी लग्न पत्र को लग्नपत्र कहना होगा।

पंचों के गुप्त चरित्रों का भंडा फोड़ करना और उस स्थान पर सच्चा न्याय नियमानुकूल करना होगा। बाल-विवाह की कुप्रथा को रोकना होगा, शारदा कानून का आदेश हो चुका है। विवाहों के नाम पर व्यर्थ धन नष्ट नहीं करना होगा। मृतक श्राद्ध को भी तिलाञ्जलि दे डालनी होगी।

वह युग शीघ्र आरहा है जब कि देश में एक दिन अनिवार्य्य शिक्षा का नाद बजेगा; अतएव हमको पूर्व ही शिक्षा सम्बन्धी कार्य आरम्भ कर देने होंगे। मुझे सन्तोष है कि जाटव कुमार अब आगे पग बढ़ा रहे हैं। हमारा एक विद्यार्थी बा० किशन-लाल (मोर्य) इङ्गलिस्तान में शिक्षा प्राप्त कर रहा है; इसी प्रकार निज देश में भी हमारे वंश के सितारे कालिजों में प्रकाशमान

हो रहे हैं। मैं अपने प्रिय कुमार बा० रामनारायन 'यादवेन्दु' को जब विद्या से रमण करते देखता हूँ तो यही अनुमान करता हूँ कि यादव वंश का शितारा अब शीघ्र ही उदय होने वाला है। मैंने अपने कर्मपरायण बा० पूर्णचन्दजी ओवरसियर को देखा है उनका जीवन भी अनुकरणीय है। हमारे मित्र डाक्टर मानिकचन्द्र जी जाटवीर जो कर्मवीर हैं उनका चरित्र भी अनुकरणीय है। यह सब कुछ सुधार के ही साधन हैं।

सामाजिक संगठन में सुधार की अति आवश्यकता है। हमारी सामाजिक शक्ति बहुधा बिखरी और छिन्नभिन्न है। उसको हमें सुसंगठित बनाना होगा। हमें सामाजिक कार्य में एक होकर कार्य करना होगा। आपस का द्वेष भाव छोड़कर मिल जाना होगा। बस यही हमारे सुधार और उन्नति का एक मात्र मार्ग है।

'सुधार' का नाद बजाना वंश के धुरन्धर वीरों का कार्य है। जो वीर स्वतन्त्रतादेवी की गोद में खेलना चाहते हैं उन वीरों को मैदान में आकर अपना कर्त्तव्य पालन करना होगा। जाटव वंश का उत्थान करना केवल नवयुवकों का कार्य है। उनको शीघ्र ही जाटव वंश की नौका को पार लगाना चाहिये। जाटव वंश का 'मान' एक बार वैसा ही प्राप्त कर लेना होगा जैसा प्राचीन काल में उसका मान था। यह सब कुछ जभी होगा जब हम सच्चे हृदय से 'जाटव वंश की जय' मनाने की चेष्टा करें। तथास्तु।

'स्वत्व'
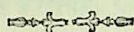
'स्वत्व' एक ऐसा विषय है जिसका सम्बन्ध प्रत्येक पुरुष से है। 'स्वत्व' से कोई भी पुरुष, यह नहीं कह सकता कि वह उनको अप्रिय है अथवा हानिकर है। 'स्वत्व' प्रत्येक पुरुष को लाभदायक और गुणकारी है। 'स्वत्व' की महिमा प्राचीन ऋषि मुनियों ने भी अपने वचन से की है। स्वत्व का महत्व नवीन जागृत के पुरुष भली प्रकार जानते हैं और उसका अनुकरण भी करते हैं। 'स्वत्व' का सहारा 'श्री जाटव महसभा' ने भी लिया है; इसी कारण उसने 'स्वत्व' को अपने तृतीय नियम में स्थान दिया है। यद्यपि हमारे जाटव बन्धु बहुत थोड़ी संख्या में 'स्वत्व' के महत्व को जानते हैं, परन्तु अधिकांश 'स्वत्व' को अभी नहीं समझे हैं। वह श्री जाटव महासभा के तृतीय नियम में अंकित 'स्वत्वाधिकार' को परताधिकार' के भाव में ले भागते और मानते हैं। वास्तव में यह उनकी भूल है 'स्वत्व' का अर्थ अपना है; इसलिये 'स्वत्वाधिकार' = अपना अधिकार के बराबर है। यहां प्रश्न पैदा होता है–अपना अधिकार क्या है? इसका उत्तर यह है कि जो कार्य हमारे करने से हो, उसको हम किसी अन्य व्यक्ति व व्यक्ति-समूह के दवाव से अथवा लोभ मोह से न करें; वरंच अपने आत्मा की प्रेरणा से करें; यही हमारा

'स्वत्वाधिकार' है। इसका विशेष भेद यह है कि जो हम अन्य पुरुष से प्रार्थना पूर्वक प्राप्त करते हैं वह 'अधिकार' और जिसको हम स्वयं निज शक्ति से प्राप्त करते हैं वह 'स्वत्वाधिकार' है। 'अधिकार' दूसरों से प्राप्त होता है; जैसे—कौंसिलों, बोर्डों आदि की मेम्बरी अथवा नौकरी प्राप्त करना अपना 'अधिकार' प्राप्त करना है। यह 'अधिकार' प्रत्येक जन को प्राप्त करना चाहिये। 'अधिकार' का लाभ केवल अधिकारी को प्राप्त होता है; परन्तु 'स्वत्वाधिकार' का लाभ प्रत्येक जनसमुदाय को (स्वाभाविक) होता है। जैसे 'श्री जाटव महासभा' ने अपने जाटव-वंश को अपना प्राचीन नाम यादव-वंश कहकर पुकारा; सब को मान्य है। कोई भी जाटव-वंशी अपने आपको यादव-वंशी कह और लिख सकता है उसको किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है। यही 'स्वत्वाधिकार है–इसका पालन करना प्रत्येक 'यादव' का धर्म है। उदाहरणार्थ—एक जीर्ण विचार का सनातनी नामधारी जो अपने आपको हिन्दू कहता है। यदि वह हमारे हाथ का जलपान नहीं करे; उसके हाथ का छुआ पदार्थ ग्रहण करना भी पाप समझा जाय; यही 'स्वत्व अधिकार' है। जिस प्रकार मधु मक्षिका अपने स्वत्व की रक्षा करती हैं, उसी प्रकार हम को भी अपने स्वत्वों की रक्षा करनीं चाहिये। जिस स्थान पर हमारे पहरने, बैठने, चलने आदि में रुकावट हो वहाँ हम को मिलकर तुरन्त अपना अधिकार प्राप्त करना चाहिये। हमारे हिन्दू भाई जिन स्थानों को हमारे नाम पर

घेरे बैठे हैं उनसे अपना अधिकार प्राप्त कर लेना आवश्यक है। एक अधिकार ऐसा हमारे हाथ में है कि जिसका प्रयोग हम करना सीख लें तो हमारा उद्धार होने में थोड़ा ही समय लगे अस्तु। यथा ज्योनारों में जो पदार्थ मिष्टान्न-हम उन हिन्दुओं से ख़रीदते हैं-जो हम से द्वेष करते हैं; उनके हाथ का छुआ पदार्थ सेवन करना पाप समझा जाय, इसी प्रकार उनका मान करना भी त्याग दें जो हमारे जाटव-वंश को अपमान कुदृष्टि से देखता है। भारत की प्रत्येक जाति का इतिहास बतलाता है कि कोई भी कौम जो ऊँची उठी है उसको दूसरी कौमों के ऊपर होकर ही जाना पड़ा है; अतः जाटव-वंश भी उनका अनुकरण करे तो लाभदायक हो।

बन्धुओ! जिस पुरुष ने 'स्वत्व' अमृत का पान किया व करेगा बस वही स्वर्ग और शान्ति को प्राप्त कर सकता है, अन्यथा मरकर जन्म लेना कीरी कुंजर सभी का धर्म है। मैं आशा करता हूँ कि आप इस 'स्वत्व' से लाभ प्राप्त करेंगे और दूसरों को उसका महत्त्व समझावेंगे।

उन्नति के उपाय
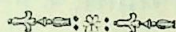
१—उन्नति सभाओं द्वारा हो सकती है, अतएव ग्राम, नगर, प्रान्तीय और सार्वदेशिक सभा हों। प्रत्येक सभा का मुख्योद्देश्य यादव-वंशोन्नति करना हो। वंशोन्नति के सुगम से सुगम उपाय सभाएँ विचारेंगी और उनका प्रचार करेंगीं।

२—चुनाव की संख्या-(क) प्रत्येक ग्राम सभा में न्यून से न्यून ५ और अधिक से अधिक ९ सभासद् होंगे (ख) प्रत्येक नागरिक सभा में न्यून से न्यून ९ और अधिक से अधिक २१ सभासद् होंगे (ग) प्रत्येक प्रान्तीय सभा में न्यून से न्यून २१ सभासद् होंगे और अधिक से अधिक ५१ सभासद् होंगे। (घ) विराट सभा केवल एक होगी जिसमें न्यून से न्यून ५१ और अधिक से अधिक ७५ सभासद् होंगे।

३—चुनाव के नियम-(क) सभासद् प्रत्येक जाटव हो सकेगा जिसकी आयु १८ वर्ष से अधिक होगी। वह अपनी आय का शतांश अथवा १) वार्षिक सभा को दान देंगे (ख) ग्राम्य सभा नागरिक सभाओं को, नागरिक सभा प्रान्तीय सभाओं को, प्रान्तीय सभा विराट सभा को अपनी आय का दशांस क्रमशः देंगीं। नागरिक सभाओं में ग्राम्य सभाओं के, प्रान्तीय सभाओं में नागरिक सभाओं के, विराट सभा में प्रान्तीय सभाओं के प्रतिनिधि होंगे। क्रमशः नागरिक सभा में ग्राम्य सभाओं के $\frac{1}{8}$ प्रतिनिधि तक रह सकेंगे और प्रान्तीय

सभा में नागरिक सभाओं के प्रतिनिधि होंगे; इसी प्रकार विराट सभा में प्रान्तीय सभाओं के प्रतिनिधि होंगे। अधिकारी व प्रतिनिधियों का चुनाव ½ सदस्यों की उपस्थिति में बहुमत से प्रति वर्ष होगा। स्थान खाली होने पर सभा अन्य सदस्य चुनेगी।

४—अधिकारी-ग्राम्य सभा में तीन अधिकारी होंगे। मुखिया, मंत्री, कोषाध्यक्ष। नागरिक सभा में चार अधिकारी होंगे। प्रधान, मंत्री, कोषाध्यक्ष, पुस्तकाध्यक्ष। प्रन्तीय सभा में छः अधिकारी होंगे। प्रधान, उपप्रधान, मंत्री, उपमंत्री, कोषाध्यक्ष, निरीक्षक। विराट सभा में सात अधिकारी होंगे। प्रधान, उपप्रधान, मंत्री, उपमंत्री, सहकारी मंत्री, कोषाध्यक्ष, महानिरीक्षक।

५—अधिकार-उचित हस्ताक्षेप करने का अधिकार प्रत्येक सभासद् को होगा। मुखिया-आय-व्यय का उत्तरदाता होगा। मंत्री-सभा के कार्यों को लिखेगा व शुभ सम्मति (अपने प्रधान को) देगा। कोषाध्यक्ष-सभा की सम्पत्ति को सुरक्षित रखेगा। पुस्तकाध्यक्ष-सभा की पुस्तकों को प्रकाशित करावेगा और विक्रय करेगा। निरीक्षक-सभा के प्रत्येक कार्य व धन का निरीक्षण करेगा और अनियम होने पर कार्य को रोकेगा। सभाएँ शुद्धि तथा संस्कारों के निमित्त विद्वानों को अधिकार देंगी। चन्दा कराने का मुख्याधिकार प्रधान को होगा। व्यय, प्रधान अथवा मंत्री दोनों कर सकेंगे। अंतरंग

सभा की स्वीकृति के अनुसार प्रधान व्यय करेगा और कोषाध्यक्ष (धन को) लिखेगा। पुस्तकाध्यक्ष-ग्रन्थ प्रकाशन करावेगा और ऐतिहासिक पुस्तकें संग्रह कर वाचनालय स्थापित करेगा। निरीक्षक-सभा के सर्व कार्यों तथा आय-व्यय का निरीक्षण करेगा। सभासद्-प्रधान की आज्ञानुसार कार्य करेंगे। प्रधान को अंतरंग सभा के आदेशानुसार कार्य करना होगा। उपनियम बनाने का अंतरंग सभा को अधिकार होगा। प्रत्येक सभा अपना वार्षिक उत्सव करने में स्वतन्त्र होगी। सभा बुलाने का अधिकार प्रधान को होगा। सभापति चुनने का अधिकार जनता को होगा।

६—अंतरंग सभा-प्रत्येक सभा में चुने हुए सदस्यों की होगी। यह सभा प्रधान के आवाहन करने पर होगी और प्रस्तावों को विचार कर स्वीकृति देगी। प्रस्ताव $\frac{2}{3}$ सभासदों की उपस्थिति में बहुमत से स्वीकृत होंगे जिनका अन्य सदस्य ने अनुमोदन समर्थन किया हो। आय व्यय की उत्तरदाता अंतरंग सभा होगी। चन्दा व दान प्राप्त करने का अधिकार अंतरंग सभा को होगा।

७—प्रस्ताव-जिसके अनुकूल आचरण से सभा और वंश को लाभ हो प्रत्येक सदस्य उपस्थित कर सकेंगे। तर्क द्वारा ठीक अन्वेषण कर लेने पर सभापति उचित निर्णय देगा जो सब को स्वीकृत करना होगा।

८—उपदेशक-प्रत्येक सभा आवश्यकतानुसार नियत करेगी। उपदेशक वंश हितैषी, ज्ञानी, विद्वान्, भाषा कुशल,

गम्भीर,शीलवान, धैर्यवान, कर्मपरायण होंगे। उपदेशक सभा के आदेशानुसार उपदेश करेंगे। उपदेशकों का वेतन व्यय सभा देगी परन्तु मार्गव्यय आमन्त्रित जन देंगे। प्रत्येक उपदेशक को 'यादव-जीवन का स्वाध्याय करना होगा। तथा प्रचारक महामंडल से प्रमाण-पत्र प्राप्त करना होगा। प्रतिष्ठित महोपदेशक वह होंगे जो अवैतनिक, सभा के अनुकूल उपदेश करेंगे।

९—उत्सव-प्रत्येक सभा के नियत समय पर होंगे। उत्सवों में भजन, व्याख्यान, उपदेश होंगे। वार्षिक रिपोर्ट आवश्यकतानुसार प्रकाशित होगी। उपयोगी प्रस्ताव स्वीकृत होंगे।

१०—नियमोपनियम-प्रत्येक सभा देश-काल के अनुकूल निर्धारित करेगी। उनका उद्देश्य जाटव-वंशोन्नति होगा। स्वत्व रक्षा और आपत्ति निवारण के नियम भी बनाने होंगे। ऐसे भी नियम-उपनियम बनाने होंगे जिनके अनुकूल जाटव कर्मकाण्ड होने से उन्नति हो।

११—सभाओं का कार्य-भजन, व्याख्यान और उपदेश कराना। पाठशाला, वाचनालय, विद्यालय स्थापित करना। जाटव-वंश के स्वत्वों की रक्षा करना। यादव-वंश का इतिहास लिखना। गवर्नमेन्ट व हिन्दू-समाज से जाटव-वंशियों को वह अधिकार दिलाना जो हमारे लिये नियत हों। विशेष अधिकारों को प्राप्त करने के निमित्त आन्दोलन कर क्रान्ति पैदा

करना। अपनी मान-मर्यादा को सुरक्षित रखना। वंश सम्बन्धी आपत्तियों को दूर करना। जाटव-वंश में उत्तम कर्मों का संचार करना। उत्तमोत्तमन्यायाधीश नियत करना। अधिकतर न्याय लिखित कराने की प्रेरणा करना। विवाह आदि में अधिक व्यय न करने की प्रेरणा करना। स्त्री-समाज को उत्तम शिक्षा देना और उनको उत्तम सन्तान उत्पन्न करने का आदेश देना। यादवधर्म से पतित भाई को नियमानुकूल शुद्ध करना। 'यादव-जीवन' की कथा कराना। मान-मर्यादा को सुरक्षित रखना। मत-मतान्तरों में प्रविष्ट भाइयों को दूसरी कौमों के बड़े कहाने वालों की चरण सेवा से बचाना और उनकी जूंठन खाने वालों को उचित दंड देना। मंदिर, मस्जिद और गिर्जों व गुरुद्वारों से बचाकर जाटव-बन्धुओं को वैदिक धर्म-स्थानों पर जाने को प्रेरित करना। ईसाई, मुसलमान, हिन्दू धर्मध्वजियों से जाटव-वंश की रक्षा करना।

१२—अन्वेषण कार्य—प्रत्येक जाटव भाई को प्रेरणा करना कि वह जाटव-वंश की इतिहास सम्बन्धी घटनाओं को प्रकाशित करावें। प्रत्येक सदस्य वाचनालयों में पहुँच कर प्राचीन ग्रन्थों से जाटव-वंश सम्बन्धी लेख संचय कर प्रकाशित करावें। गोत्रों की अन्वेषणा कर उनको शुद्ध रूप प्राप्त कराना चाहिये।

१३—जिन जाटव बन्धुओं ने दूसरी कौमों से सम्बन्ध किया हो उनको सदोपदेश देकर स्ववंश में प्रविष्ट कराना

प्रत्येक जाटव भाई का कर्त्तव्य है । मुसलमान ईसाइयों ने जिन जाटव भाइयों को अथवा देवियों को भ्रमाकर अपना गुलाम बनाया है उनको सदोपदेश और प्रेम से समझाकर स्ववंश वृद्धि करना ।

१४—रहन-सहन, बोल-चाल, ज्ञान-विज्ञान, धर्म-कर्म वेदों के अनुकूल सीखना सिखाना । धूर्तों के आचरणों का त्याग कराना प्रत्येक सभासद् को अपना परमधर्म मानना चाहिये ।

१५—निज सन्तान को वीर बनाना और वंश-हित बलिदान की शिक्षा देना ।

यादव वंश के नेता, उपदेशक व प्रतिष्ठित पुरुषों

तथा

श्री जाटव महासभा व साखा सभाओं के

कार्यकर्त्ताओं की नामावली

१. श्रीमान् पं० सुन्दरलालजी सगर संस्थापक, श्री जाटव महासभा व जाटव प्रचारक महामण्डल, आगरा

२ ,, पं० प्रभुदयालजी व्यास भूतपूर्व प्रधान जाटव प्रचारक महामण्डल, आगरा

३ ,, डाक्टर मानिकचन्द्र जी जाटववीर प्रधान संयुक्त प्रान्तीय सर्व दलित सभा व संस्थापक जाटव स्वयं सेवक मण्डल, (आगरा)

४ ,, पं० छेदीलालजी कर्णिक महोपदेशक आगरा

५ ,, पं० लालारामजी निम (विचारसागर) आगरा

६ ,, बौहरे खेमचन्दजी भूतपूर्व प्रधान श्री जाटव महासभा, M. D. B. Ex.-M. L. C. आगरा

७ ,, बा० नन्दकिशोरजी भूतपूर्व मंत्री श्री जाटव महासभा आगरा

८ ,, सेठ मोतीलालजी प्रधान, श्री जाटव महासभा (आगरा)

९ श्रीमान् बा० कर्णसिंहजी केन B. A. उपप्रधान महासभा आगरा
१० ,, बा० रामप्रसादजी, मंत्री जाटव महासभा आगरा
११ ,, ला० हुकमसिंहजी कश्यप उपमंत्री महासभा आगरा
१२ ,, चौ० रामचन्दजी भूतपूर्व कोषाध्यक्ष आगरा
१३ ,, बा० शीसारामजी इंजीनियर, आगरा
१४ ,, पं० बंशीधरजी आनरेरी उपदेशक आगरा
१५ ,, पं० पूर्णचन्दजी केन Overseer Govt. House Delhi.
१६ ,, डाक्टर धनसिंहजी उपदेशक भूतपूर्व मैनेजर जाटव, आगरा
१७ ,, बा० ज्ञानचन्दजी B. A. आगरा
१८ ,, सेठ पन्नालालजी रईस आगरा
१९ ,, बा० छोटेलालजी आगरा
२० ,, बा० यादरामजी ठेकेदार भूतपूर्व उपप्रधान महासभा आगरा
२१ ,, बा० निरोत्तमदासजी आनरेरी उपदेशक आगरा
२२ ,, महाशय तुलसीरामजी ,, नगला सिंहान आगरा
२३ ,, सेठ वनवारीलालजी भूतपूर्व मंत्री श्री जाटव महासभा आगरा
२४ ,, बा० रणजीतसिंहजी भूतपूर्व उपमंत्री महासभा आगरा

२५ श्रीमान् कुं० रामप्रसादजी सौनी यादव रचियता समाज-संजीवनी आगरा
२६ ,, कुंवर कृष्णलालजी मौर्य्य आगरा
२७ ,, विद्यार्थी रामनारायणजी निम 'यादवेन्दु' आगरा
२८ ,, बा० रामदयालजी सगर भूतपूर्व मंत्री जाटव स्वयं सेवक मंडल, आगरा
२९ ,, बा० रामस्वरूपजी सगर ठेकेदार आगरा
३० ,, सेठ मंगलीप्रसादजी गोपीचन्द्रजी पिपिल आगरा
३१ ,, चौ० रामरत्नजी जाटव सोहल्ला आगरा
३२ ,, सेठ ख्यालीरामजी उपप्रधान महासभा आगरा
३३ ,, बा० पातीरामजी यादव आगरा
३४ ,, बा० रामजीलालजी यादव आगरा
३५ ,, बा० कल्यानसिंहजी भोजराजजी यादव आगरा
३६ ,, बा० ग्यासीलालजी यादव आगरा
३७ ,, बौहरे जीवनरामजी यादव मैम्बर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड व मैम्बर एक्साइज़ बोर्ड मैनपुरी
३८ ,, चौ० गोकुलचन्दजी जाटव प्रधान जाटव सभा मैनपुरी
३९ ,, ला० मिढ़ईरामजी यादव मैनपुरी
४० ,, महात्मा क्षमानन्दजी त्यागी यादव इटावा
४१ ,, बौहरे रामदयालजी यादव ठेकेदार प्रधान जाटव सभा इटावा

४२ ,, बा० बद्रीप्रसादजी जाटव मंत्री म्युनिस्पिल कमिश्नर इटावा

४३ ,, कुं० श्यामलालजी जाटव मैम्बर डिष्ट्रिक्ट बोर्ड इटावा

४४ ,, बौहरे देवीरामजी यादव ठेकेदार इटावा

४५ ,, हकीम गयाप्रसादजी यादव भरथना इटावा

४६ ,, बा० बख्तावरलालजी यादव ओवरसियर फतेहगढ़

४७ ,, बा० रतनलालजी मैम्बर डि० फ़रुख़ाबाद

४८ ,, बा० द्वारिकाप्रसादज़ी मंत्री फ़रुख़ाबाद

४९ ,, बा० हीरालालजी यादव भजनोपदेशक कन्नौज

५० ,, बा० बनबारीलालजी यादव कायमगंज

५१ ,, स्वामी हरिहरानन्दजी (यादव) कानपुर

५२ ,, बा० पूर्णचन्दजी भोलानाथ जी यादव कानपुर

५३ ,, मिस्त्री मवासीरामजी हजारी बंगला कानपुर

५४ ,, चौ० खेमचन्द्रजी भूतपूर्व मैम्बर डि० बोर्ड एटा

५५ ,, चौ० जंगीरामजी प्रधान जाटव सभा एटा

५६ ,, वैद्य कन्हैयालालजी म्युनिस्पिल कमिश्नर हाथरस

५७ ,, सेठ इन्द्रमणिजी अलीगढ़ उपप्रधान जा०म०स०

५८ ,, चौ० डालचन्दजी रईस भूतपूर्व मैम्बर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड व मैम्बर एज्यूकेशन बोर्ड मथुरा

५९ ,, चौ० भदईरामजी मैम्बर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड पुरा मथुरा

६० श्रीमान् बा० मेघरामजी यादव अजमेर (राजपूताना)
६१ ,, बा० मांगीलालजी यादव Overseer कोटा ,,
६२ ,, बा० मूलचन्दजी यादव ठेकेदार कोटा ,,
६३ ,, बा० हरदेवजी यादव ठेकेदार कोटा ,,
६४ ,, बा० खचेरारामजी यादव ठेकेदार बारां कोटा ,,
६५ ,, बा० धन्नारामजी यादव ,, ,, ,, ,,
६६ ,, बा० ओंकारजी यादव ,, ,, ,, ,,
६७ ,, बाबा रूपदासजी यादव ,, ,, ,, ,,
६८ ,, बा० प्रसादीलालजी यादव क्वेरी फोर्मैन लखेरी
६९ ,, बा० पहलवानसिंहजी यादव लोको फोर्मैन B. B. & C. I. Ry. सवाई माधोपुर
७० ,, बा० टीकारामजी यादव अछनेरा, आगरा
७१ ,, बा० धनीरामजी यादव नीमच छावनी C. I.
७२ ,, बा० पूर्णचन्द्रजी ब्राह्मो इन्दौर
७३ ,, मास्टर हरभजनदास मऊ छावनी
७४ ,, पं० हरफूलसिंहजी यादव उपदेशक देहली
७५ ,, पं० छेदीलालजी 'भूपति' महोपदेशक रचयिता यदुवंश भास्कर देहली
७६ ,, वीररत्न देवीदासजी जाटव मंत्री जाति सुधार सभा देहली
७७ ,, बा० लक्ष्मणसिंहजी यादव देहली
७८ ,, ला० लब्बूरामजी यादव होशियारपुर पंजाब
७९ ,, ला० केशरीरामजी यादव लाहौर पंजाब

८० श्रीमान् बा० हंसरामजी यादव जालन्धर पंजाब
८१ ,, बा० खुमानसिंहजी यादव ठेकेदार इटावा
८२ ,, वैद्य सुदर्शनसिंहजी यादव देहली
८३ ,, पं० मनीषीदेवजी यादव शास्त्री काव्यतीर्थ देहली
८४ ,, बा० रामप्रसादजी यादव F. A. देहली
८५ ,, डाक्टर धर्मप्रकाशजी यादव महामंत्री संयुक्त-प्रान्तीय सर्व दलित सभा मैम्बर डि० बोर्ड मेरठ
८६ ,, साधु भोलेदासजी यादव मेरठ
८७ ,, पं० गंगीदत्तजी यादव मेरठ
८८ ,, चौ० रमईलालजी जाटव मैम्बर चुङ्गी बरेली
८९ ,, बा० हीरालालजी यादव दानपुर बुलन्दशहर
९० ,, ब्रह्मचारी कान्छीप्रसादजी यादव बुलन्दशहर
९१ ,, ला० मूलचन्दजी भू० पू० कोषाध्यक्ष आगरा
९२ ,, बा० लेखराजसिंहजी भूतपूर्व उपमंत्री श्री जाटव महासभा लंका
९३ ,, सेठ तुलईराम जी नारायनसिंह यादव आगरा
९४ ,, सेठ रतनलालजी किशोरीलाल यादव आगरा
९५ ,, बौहरे मोतीरामजी यादव ठेकेदार आगरा
९६ ,, बौहरे श्यामलालजी यादव ठेकेदार ईस्ट इन्डिया रेलवे टूंडला आगरा
९७ ,, बा० विश्वम्भरलालजी यादव रका० मा० आगरा
९८ ,, बौहरे गोवर्धनलालजी ठेकेदार जाटव मैनपुरी

९९ श्रीमान ला० मानसिंहजी मैम्बर सिर्सागंज मैनपुरी.
१०० ,, ला० परमसुखजी मैम्बर सिर्सागंज मैनपुरी.
१०१ ,, ला० मवासीरामजी मैम्बर एतमादपुर आगरा.
१०२ ,, चौ० खमानीरामजी जाटव कोषाध्यक्ष आगरा.
१०३ ,, बा० टेकचन्दजी यादव रिटा० इञ्जीनीयर आगरा
१०४ ,, डा० सीतारामजी यादव आगरा.
१०५ ,, मा० सुम्मेरसिंहजी यादव टेलर मास्टर आगरा.
१०६ ,, बा० भोपतिरामजी यादव ठेकेदार आगरा
१०७ ,, बा० सेवारामजी यादव ओवरसियर आगरा
१०८ ,, बा० किशोरीलालजी यादव ओवरसियर आगरा
१०९ ,, बा० नन्दरामजी यादव ओवरसियर जबलपुर
११० ,, बा० जोखनलाल जी यादव पोस्टमास्टर मऊ
१११ ,, बा० नत्थीलालजी यादव स्काउट आगरा
११२ ,, बा० मोहनलालजी यादव गवर्नमेंट कन्ट्रैक्टर अछनेरा आगरा (हाल देहली)
११३ ,, बा० प्रेमसिंह जी यादव हैडक्लर्क कानपुर
११४ ,, बा० छोटेलालजी यादव (इटावा) रतलाम
११५ ,, बा० भगवानदासजी यादव स्काउट आगरा
११६ ,, बा० नन्दराम जी यादव हैड क्लर्क लोका कोटा
११७ ,, बा० रामविलास यादव स्काउट आगरा
११८ ,, पं० डालचन्द्रजी यादव भजनोपदेशक हापुड़
११९ ,, मा० खचेड़ूसिंहजी यादव ,, मेरठ

१२० श्रीमान् मा० छेदीलालजी यादव भजनोपदेशक देहली
१२१ ,, मा० नन्दरामजी यादव ,, कानपुर
१२२ ,, पं० टीकारामजी यादव ,, आगरा
१२३ ,, मा० कुन्दनलालजी यादव ,, आगरा
१२४ ,, मा० चेतरामजी जाटव नार्मल स्कूल आगरा
१२५ ,, मा० नत्थूसिंहजी यादव ,, मेरठ
१२६ ,, मा० छेदीलालजी यादव ,, मैनपुरी
१२७ ,, डा० केदारनाथजी यादव मैडी० का० आगरा
१२८ ,, बा० निहालसिंहजी यादव मैट्रिक देहली
१२९ ,, बा० रामजीलालजी यादव मैट्रिक देहली
१३० ,, ब्रह्मचारी छत्रपतिजी यादव गुरुकुल ब्रन्दावन
१३१ ,, ,, बालकृष्णजी यादव ,, ,,
१३२ ,, विद्यार्थी बाबूलालजी यादव आगरा
१३३ ,, ,, छोटेलालजी यादव आगरा
१३४ ,, ,, ब्रजकिशोर जी यादव अभीर क्षत्रिय हाईस्कूल शिकोहाबाद
१३५ ,, डा० रामकिशन यादव इलाहबाद
१३६ ,, बा० पूरनचन्द्र इञ्जीनियर कासगंज
१३७ ,, बा० सुन्दरलाल जी यादव इञ्जीनियर डिबाई
१३८ ,, बा० जगन्नाथप्रसाद जी सुपरवाइज़र आगरा
१३९ ,, बा० लीलाधर जी ,, एटा
१४० ,, बा० डालचन्द जी यादव स्का०मा० आगरा

स्वर्गीय

यदुवंशी प्रसिद्ध पुरुषों तथा

श्री जाटव महासभा व शाखा सभाओं के

कार्यकर्त्ताओं की नामावली
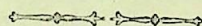
१ श्रीमान् स्वर्गीय जाटवकुलभूषण सेठ सीताराम मानसिंह जी आगरा Founder and Spinning and Weaving Mills Agra.

२ ,, ,, स्वामी आत्मारामजी नेपाल निवासी

३ ,, ,, बा० रामसिंहजी नगला सिंहान आगरा

४ ,, ,, मिस्त्री मुर्लीधरजी साध भू० पू० उपमंत्री श्री जाटव महासभा (आगरा)

५ ,, ,, बा० चोखेलालजी ठेकेदार भू० पू० उपप्रधान महासभा, (आगरा)

६ ,, ,, बा० चोखेलालजी (गैलाना) आगरा

७ ,, ,, सेठ बोदीलालजी भू० पू० उपप्रधान श्री जाटव महासभा आगरा

८ ,, ,, मास्टर चेतरामजी भजनोपदेशक ऐटा

९ श्रीमान् स्वर्गीय बा० रामसहायजी भू० पू० प्रधान जाटव सभा इटावा
१० ,, ,, सेठ सईराम सुम्मेर जी जाटव गवर्नमेंट कन्ट्रैक्टर अलीगढ़
११ ,, ,, बौहरे नत्थाराम जी चिन्ताराम जी जाटव मथुरा
१२ ,, ,, बा० दीपचन्दजी ओवरसियर, आगरा
१३ ,, ,, बा० लक्ष्मणसिंहजी ओवरसियर आगरा
१४ ,, ,, सेठ नानिगरामजी रईस Govt. Contractor of Assembly Chamber, Delhi (अछनेरा आगरा)
१५ ,, ,, मिस्त्री निधनारामजी आगरा
१६ ,, ,, ला० चतुरीरामजी शाहगंज आगरा
१७ ,, ,, बा० शिवचरणदासजी S. L. C. एटा
१८ ,, ,, ठेकेदार मेवाराम जी फ़िरोज़ाबाद
१९ ,, ,, बौहरे रेवतीरामजी सिर्सागंज मैनपुरी
२० ,, ,, बा० रामलालजी यादव रिटायर्ड स्टेशन मास्टर आगरा

हमें जिन सज्जनों के नाम स्मरण हो सके हैं उनके नाम सादर उल्लखित किये हैं। यदि भूल से किसी सज्जन का नाम अंकित न हुआ हो तो कृपया सूचित करें। भविष्य में संकलन कर दिया जायगा।

—प्रकाशक

❀ प्रतिज्ञा ❀

(१)

तन मन धन जीवन साधन हम सभी वंश पर वारेंगे।
प्राणों की अन्तिम आहुति से भी हम उसे उबारेंगे॥
चाहे सर कटजाय हमारा अंग अंग से रक्त बहे।
वन्शोन्नति की लग्न लगी हो प्रण सदैव सशक्त रहे॥

(२)

'यादव जीवन, आलोकित हो, सङ्कर-दल का गर्व हनें।
यदु-वंश हो भव में सोहे, भारत भाल का तिलक बनें॥
भक्ति, आत्म-सम्मान सहित सब, वंश हेतु शुभ काम करें।
जीते जी अन्याय सहें नहिं, पर हम निज वलिदान करें॥

—यादवेन्दु

❀ कर्त्तव्य ❀

कर्त्तव्य पालन के लिये हर एक नर तैयार होगा।
आपत्तियों से हर तरह इस वंश का उद्धार होगा॥ १॥
दूर होंगे दुख सारे सुख का संचार होगा।
कर्म वीर बनने से इस वंश का उपकार होगा॥ २॥
जो समय खाली गया तो फिर समय दुशवार होगा।
मनुष्य जीवन यह तुम्हारा पृथ्वी पर भार होगा॥ ३॥
वंश के उद्धार को एक धर्म का आधार होगा।
'व्यास, का ये ही निवेदन वंश को स्वीकार होगा॥ ४॥

—प्रभुदयाल व्यास

---

* ॐ *

श्री जाटव महासभा के नियम

१—यादव वंश का उद्धार करना इस सभा का उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति करना।

२—यादव वंश के कर्मों पर विचार करना और शुभ कर्म (यम नियमादि का पालन) करते हुये यज्ञोपवीत आदि गुप्त संस्कारों का शास्त्रानुकूल करना व कराना।

३—यादव (जाटव) वंश के लिये स्वत्वाधिकार शास्त्रानुकूल प्राप्त करना व कराना।

४—यादव वंशियों पर वंश के सम्बन्ध में आपत्ति उपस्थित हो उसका उचित प्रबन्ध करना।

जाटव प्रचारक महा मण्डल के

नियम

१—श्री जाटव महासभा के उद्देश का प्रचार करना।

२—सद् ग्रन्थानुकूल उत्तम कर्मों का प्रचार करना।

३—साहित्य-वृद्धि अर्थात् उपयोगी ग्रन्थादि प्रकाशित करना।

४—यादव वंश में वंशोत्साह उत्पन्न करना।

५—संगठन का प्रचार करना।

६—शुभाशुभ कर्मों का दिग्दर्शन करना।

७—इतिहास की अन्वेषणा करना।

८—जाटव वंश के प्राचीन यादव नाम का प्रकाश करना।

पुस्तक मिलने का पता—

डाक्टर मानिकचन्द यादव वीर

राजामण्डी–आगरा

कार्यालय—

श्री जाटव महासभा

(आगरा)

पुस्तक मिलने का पता—

डाक्टर मानिकचन्द्र यादव वीर
राजामण्डी–आगरा

कार्यालय—
श्री जाटव महासभा
(आगरा)